Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

दीन बन्धु सर छोटूराम

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

जाट लहर

जाट सभा
सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"k 17 v\d 08 30 vxLr 2017 eY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से

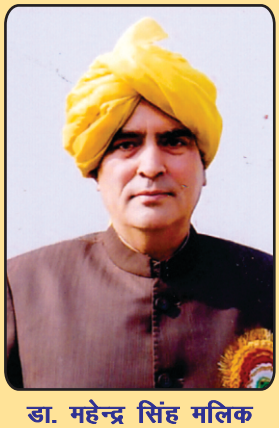

आंतरिक सुरक्षा पर खतरे के बादल

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

'बागवां ने आग दी, जब आशियाने को मेरे, जिनका तकिया था वही पत्ते हवा देने लगे' अर्थात चार दिनों में हुए रेलवे के दो गंभीर हादसों से प्रतीत होता है कि देश के प्रधानमंत्री जी का 2022 तक इस महान देश को दूध और शहीद की पवित्र भूमि बनाने का सपना पूरा नहीं हो पाएगा। लगातार बढ़ती हुई जातिवाद व सांप्रदायिकता की घटनाएं निरंतर बढ़ रहे भ्रष्टाचार, उग्रवाद व अलगाववाद की चिंगारियों तथा उनकी अपनी टीम की विफलता से देश की सुरक्षा पर खतरे के बादल लगातार मंडरा रहे हैं। वर्तमान केंद्रीय रेल मंत्री की 3 वर्ष की कार्य अवधि के दौरान 207 रेलगाडी पटरी से नीचे उतरी अथवा दुर्घटनाएं हुई जिनमें 249 बेकसूर जाने चली गई। इस घोर त्रासदी/लापरवाही के लिये कौन जिम्मेदार है? इसी प्रकार स्वास्थ्य विभाग की बेमानी व लापरवाही के कारण राष्ट्र के सबसे बड़े प्रांत उत्तर प्रदेश में 100 से अधिक मासुमों की जान जा चुकी हैं। पाकिस्तान तो विश्व के अंदर उग्रवाद का प्रथम गढ़ है लेकिन इस राष्ट्र में भी कट्टरपंथियों के खोखले राष्ट्रवाद के कारण 21वीं सदी में भी भारी जन समूह को देश के दूसरे विभाजन का डर सता रहा है। अतः वर्तमान शासक दल को 'सबका साथ, सबका विकास' के नारे को साकार बनाने हेतू इस दिशा में वास्तविक कदम उठाते हुए अत्यंत जागरूक रहने की आवश्यकता है।

आज देश की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था बुरी तरह से चरमरा गई है और बाहरी सुरक्षा पर भी खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। इस अवस्था के लिए मुख्य रूप से राष्ट्र में अंदरूनी बढ़ती हुई सांप्रदायिक व जातीय हिंसा, जेहादी उग्रवाद, उतर पूर्वी राज्यों में बढ़ती हुई अलगाववाद की भावना, माओवाद, राष्ट्रीय भावना का अभाव, चरमराती कानून व्यवस्था, बढ़ती हुई बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, आर्थिक असमानता, नेताओं की दलगत वोट की राजनीति व लाल सलाम उतरदायी है। इससे भी बढ़कर देश की बाहरी सीमाओं में पड़ौसी राज्यों -पाकिस्तान, बंगलादेश, चीन, भुटान नेपाल, श्रीलंका आदि से हो रही लगातार अनगिनत असामाजिक व जेहादी तत्वों की अवैध घुसपैठ, बेहतर संबंधों के नाम पर चीन द्वारा किया जा रहा भीतरघात, भारतीय समुद्री मार्ग तट व इसके आस पास के इलाकों से हो रही अवैध घुसपैठ व तस्करी से भी राष्ट्र की बाहरी सुरक्षा के साथ-साथ अर्थव्यवस्था की स्थिति बिगड़ती जा रही है।

राष्ट्र के अनेकों राज्यों में अराजकता और सांप्रदायिकता का माहौल है। कहीं नक्सली हमले, कहीं जातीय, वर्गों, धर्मों के नाम पर आए दिन फसाद, हमले सरकारी संपदा को नुकसान की खबरें मिलती रहती हैं। झारखंड, छत्तीसगढ में सुरक्षा बलों पर हमलों की कई वारदातें हो चुकी हैं और जम्मु कश्मीर में सेना पाकिस्तान की ओर से हो रही रही आतंकवादी घुसपैठ तथा पाक सेना की गोलाबारी के साथ सेना और सुरक्षा बलों पर पत्थरबाजी की घटनाएं आम हैं। सैनिक दोहरी मार झेलते हुए शहीद हो रहे हैं और घायल भी। राजनेता कोलीशन धर्म पर आंखे मूंदे बैठा है। कहा जाता है कि पत्थर भी दो प्रकार के हाते हैं। सेना पर गिरे तो भटके हुए युवा और राजनेता पर गिरे तो लोकतंत्र पर हमला। यह दो धारी आचरण कानून व्यवस्था के रक्षकों और सरहदों के प्रहरियों के लिए ना गंवार गुजर रहे हैं। ऐसा नहीं है कि वे इनसे निपट नहीं सकते - केवल उनके हाथ बंधे हैं। ऐसा ना हो कि सब्र का बांध टूट जाए और रणबांकुरे अपने अपमान का बदला लेने पर उतारू हो जायें। पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान की उत्कृष्ठ उदाहरण है। वे भारत में आतंकवाद एवं आंतरिक असुरक्षा का माहौल का पोषक है जो कई बार सिद्ध हो चुका है। खुद वे पब्लिक और सेना के दोहरे असंतोष का झेल रहा है। खुद ही तैयार किए भस्मासुर आतंकवादी एक समानांतर सरकार चला रहे हैं। भारत में आज गो-रक्षकों, मंदिर मस्जिदों के झगड़ों में जनता पिस रही है। ऐसे माहौल को देखते हुए पड़ोसी देश भी बहती हाथ में धोने आ धमके। आज चीन, पाकिस्तान, श्रीलंका तथा दूर देश भी हमारी सरहदों के लिए खतरा बन गए हैं।

भारतीय रणबांकुरे राजनेताओं के आपसी अह्म के शिकार हो रहे हैं। यहां यह भी वर्णनीय है कि भारतीयों को दुश्मनों से ज्यादा तो अपनों से खतरा बना रहता है क्योंकि कश्मीरी नेता दोगली चाल चलते हैं। सेना पर इल्जाम लगाते हैं और पत्थरबाजों को पोषित करते हैं। इस फूट का लाभ उठाकर मुट्ठीभर लोग भारत महान को हजारों वर्षों तक गुलामी की बेड़ियों में जकड़ने में कामयाब रहे। वे 'फाड़ो और राज करो' पर अमल करते हुए खुद ही कातिल, खुद ही गाईड, खुद ही जज बनकर भारत पर राज करते रहे। आज सांप्रदायिकता दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है।

चीन हर जगह दबगंई से आंखे दिखता है और निर्विरोध कब्जे पर उतारू रहता है। भारतीय अक्साईचिन क्षेत्र पर वे मार्च करता हुआ कब्जा कर गया था। तिब्बत को निर्विरोध कब्जा अब अरूणाचल प्रदेश, सिक्किम, भुटान पर गिद्ध दृष्टि जमाए है। दबगंई में डोक्लाम (भुटान) में भारतीय और चीनी सेना आमने-सामने हैं। चीन इस क्षेत्र को ज़र खरीद समझ निर्विरोध कब्जा चाहता है क्योंकि तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने लोकसभा में यह कहकर पल्ला झाड़ लिया था कि उस क्षेत्र में तो घास भी पैदा नहीं होता। आज उसी क्षेत्र से निकलकर चीन, अफ़ग़ानिस्तान, ब्लोचिस्तान को रौंदता हुआ पाकिस्तान तक सड़क निर्माण कर रहा है क्योंकि हमने कभी क्षेत्र की महत्ता को नहीं माना।

'k"k ist&2 ij

शेष पेज–1

वर्ष 2015 में भारत में 45 आतंकी ग्रुप सक्रिय थे जो 2016 में बढ़कर 52 हो गए। यह अप्रत्याशित वृद्धि क्या इंगित कर रही है? अमेरिका द्वारा केंद्रीय रिर्जव पुलिस (सी.आर.पी.एफ.) दल पर बिहार में हुए नक्सली हमले को सबसे भयानक कहा गया है। एक अनुमान है कि भविष्य में साईबर अपराध इससे भी भयानक स्थिति पैदा करने जा रहा है और 2020 तक इसमें 93 प्रतिशत की बढौतरी की आशंका है। वर्ष 2016 में ही जम्मु-काश्मीर में ऐसे अपराधों में 19 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। छत्तीसगढ़ में 18 प्रतिशत, मणीपुर में 12 प्रतिशत व झारखंड में ऐसे अपराधों में बढौतरी दर्ज हो चुकी है। सर्वोपरि चिंतनीय विषय है कि केवल चार राज्यों में 50 प्रतिशत से अधिक ऐसे अपराध हुए हैं।

वर्ष 2016 में विश्व स्तर पर इराक, अफगानिस्तान, भारत तथा पाकिस्तान में हुए कुल 11072 आतंकी हमलों में से 927 केवल भारत में हुए हैं। स्मरण रहे कि वर्ष 2015 में 798 हमले हुए थे इनमें शहीदों और घायलों में भी मात्र एक ही वर्ष में असहनीय वृद्धि हुई है। वर्ष 2015 में 289 से बढ़कर 2016 में 337 शहीद हुए और घायल 500 की तुलना में 636 हुए जबकि आतंकवाद के जनक पाकिस्तान में इसी अवधि में 1010 के मुकाबले 734 होने के कारण 27 प्रतिशत की कमी दर्ज हुई है।

नक्सलवाद की तह में जाया जाए तो किसी हद तक वे अपने औचित्य में सही लगते हैं। आदिवासियों का मानना है कि जल-जंगल-जमीन प्राकृतिक साधनों के वे पुत्र हैं। आज उस क्षेत्र के विकास के नाम पर जंगल और प्राकृतिक साधनों का दोहन हो रहा है। इस पर उद्योगपतियों का कब्जा राजनेता करवा देता है लेकिन आदिवास पुर्नवास की ओर ध्यान नहीं देता। भूख और बेहाली में वह बंदूक उठा लेता है। आदिवासी उस पर भरोसा करते हैं क्योंकि वह लूट में से उनकी समय-समय पर मदद भी करता है। उनका तर्क है कि शहर में दो वर्ष के लिए एक नाजायज कब्जा कर झुगी बना लो और राजनेता वोट बैंक की खातिर उन्हे पक्के मकान तक बनवा कर निशुल्क दिलवा देता है जो हर शहर की कहानी है फिर आदिवासी तो पीढ़ी दर पीढ़ी इसी जंगल में रह रहा है जहां कोई पटवारी नहीं, कोई रसीद पर्ची नहीं लेकिन उसके जीवन-यापन की व्यवस्था हो जाए। विश्वास है कि वे मुख्यधारा में आ जाएंगें क्योंकि कोई भी अपना जीवन खतरे में डालना नहीं चाहेगा। सभ्य समाज मार्क्स लोनीन या माऊ-से-तुंग से परीचित है। हालांकि वे भी अब औद्योगिकरण की ओर बढ़ चुके हैं लेकिन अभी भी उनके नाम लेना कुछ देश तथा भारत के कुछ राज्य हैं। हमें समय रहते चेतना होगा अन्यथा देर हो जाएगी और उर्दू की कहावत है कि 'नुक्ते की हेर-फेर नेमुझे महरम से मुजरिम बना दिया' जो हम पर भी घटित हो सकती है।

मास सितंबर तक 2016 में जम्मु-काश्मीर में हुए आतंकी हमलों में 17 हताहत तथा 16 घायलों की खबर है, जिनमें अमरनाथ यात्रा पर अनंतनाम में हुआ हमला प्रमुख है। वर्ष 2015 में 882 वारदातों में 387 हताहत, 647 घायल व 2014 में 860 वारदातों में 490 हताहत तथा 776 घायल। वर्ष 2013 में कुल 694 वारदातों में 467 हताहत व 771 घायल हुए जो हर वर्ष बढौतरी ही दर्ज कर रहे हैं। वर्ष 2005 में ऐसी कुल 145 वारदातें हुई, जिनमें 463 हताहत और 1216 घायल हुए थे। वर्ष 2017 में अब तक राष्ट्र में 296 हिंसक घटनाएं हो चुकी हैं जिनमें 44 व्यक्ति मौत के शिकार हुए हैं। अकेलें उत्तर प्रदेश में मई के अंत तक 60 आतंकवादी घटनाएं हुई हैं। राष्ट्र में निरंतर बढ़ रही आतंकी व हिंसक वारदातों से राष्ट्र की सुरक्षा व व संवैधानिक मुल्यों के लिए खतरनाक परिणामों पर चिंता व्यक्त करते हुए राष्ट्र के उच्च स्तरीय अधिकारियों सहित 114 सेवा निवृत सुरक्षा सैनिकों ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, सभी राज्यों के मुख्यमंत्री व यु0टी0 के लैफिटनैंट गर्वनरों को समय रहते खुला पत्र लिखकर कारगर कदम उठाने का आग्रह किया है।

भारतीय राजनेताओं की दोगली नीति और सरकार का ढुलमुल रवैये की बदौलत वर्ष 2016 में जम्मु-कश्मीर में बुराक वानी के मारे जाने से अंहिसा फैला दी गई। एक आतंकी को हीरो बना दिया और 90 लोग इस आग में अपनी जान गवां बैठे। तथ्य यह भी है कि इस अवधि में 148 आतंकी मारे गए जो 2011 के बाद सर्वाधिक थे तथा इसी अवधि में हताहत नागरिकों की संख्या 1988 से 45 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई। वर्ष 2004 से 2013 तक 1798 नागरिक, 1177 सरुक्षा कर्मी यानि कुल 3339 हताहत हुए जबकि 2014 से जुन 2017 तक कुल 842 हताहत जिनमें 105 नागरिक व 223 सुरक्षाबल और 514 आतंकी शामिल हैं।

उत्तर-पूर्वी भारत की अलग समस्याएं व अलग मांगे हैं। यहां वास्तविकता यह है कि यह क्षेत्र विकास से अछूता है और मिशनरी ने इस तथ्य का लाभ उठाकर पंख पसारे और ईसाई बाहुल्य राज्य बन गए लेकिन तथ्यों से इनकार नहीं किया जा सकता कि क्षेत्र पृथकता की आम से झुलस रहा है। आज भी ऐसे दुर्गम स्थान हैं, जहां पहुंचना अंसभव

हैं और उस पर भी भाषाई दिक्कतें अकेले नागालैंड में 18 जनजातियां हैं, जिनकी आपसे में भाषा एकरूप नहीं हैं और उनका आपसी वार्तालाप ना के बराबर था लेकिन अब ओयल बाहुल्य जनजाति के प्रयासों से नागामी विकसित हुई है तथा नागा पुलिस व नागरिक सेवा के अधिकारी भी बने हैं लेकिन एक क्षेत्र विशेष से ही हैं।

राष्ट्र में बढ़ रही बेरोजगारी युवा वर्ग के भविष्य के प्रति सुरक्षा व निराशा की भावना से ही ग्रस्त कर रही है। इसी लिए राष्ट्र विकास से हटकर आर्थिक विकास का अभाव और भुखमरी, नक्सलवाद व आतंकवाद की ओर प्रेरित कर रहा है। कई राज्यों में तो माओवादी खुद फैसले सुनाने, कर इकट्ठा करने तथा आमजन को सुरक्षा तक पहंचाने का कार्य करते हैं। सैनिकों की अनदेखी हो रही है जबकि चाणक्य का मूल मंत्र था कि सैनिकों एवं उनके परिवारों की भलाई की रक्षा करो जिससे देश की सरहदें स्वत- सुरूक्षित हो जाएंगी लेकिन आज बाबू और भ्रष्टाचारी सत्ता के गलियारों पर पूर्णतया एक छत्र राज्य कर रहे हैं और आए दिन सैनिकों के अहित के फैसले करवा रहे हैं। ऐसे हताश सैनिक कब तक राष्ट्र की स्वाभिमान की रक्षा हेतू अपना सर्वस्व लुटाते रहेगें?

आज राष्ट्र धर्म, रंग, जाति के नाम पनपती भीड़ का नागरिक विवेके खत्म हो चुका है। समाज को सच परोसने वाला कोई नहीं है। मीडिया व राजनेता अपनी सुविधानुसार झूठ को सच बनाकर बेच रहे हैं और युवा धर्म और संस्कृति के सड़े-गले विचारों की अर्थी ढो रहा है। तर्कशीलता में संसाधनों की कमी और मध्यकालीन बर्बर मानसिकता की ओर धकेलने वाले साधन काफी अधिक हैं। ऐसी भीड़तंत्र की धर्मजनित सोच लोकतंत्र की जल्दी ही तानाशाही की ओर धकेल देगी। संकेत स्पष्ट हैं कि हम बर्बर युग की ओर बढ़ रहे हैं। आज विवेकानंद जैसे विवेकशील चिंतकों और चाणक्य जैसे गुरूओं की नितांत जरूरत है तभी यह भारत महान अना गौरव पुनः हासिल कर सकेगा।

इसके साथ ही राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा, अखंडता व आन बान को बनाए रखने के लिए संघर्षरत सुरक्षा बलों व सैन्य कर्मियों के कल्याण व विकास हेतू राष्ट्रीय नीति बनाई जानी चाहिए। राष्ट्र की सुरक्षा, अखंडता के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले शहीदों व उनके आश्रितों के सम्मान व कल्याण के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानजनक नीति निर्धारित की जानी चाहिए ताकि राष्ट्रीय व सीमा पार की सुरक्षा में लगे हुए सुरक्षा बलों एवं अलगाववादियों व आतंकवादियों से विषम परिस्थितियों में मुकाबला कर रहे सुरक्षा सैनिकों में आत्मविश्वास, स्वच्छंदता, आत्मनिर्भरता व आत्म सम्मान की भावना कायम रखी जा सके क्योंकि शहीदों के सम्मान से ही सुरक्षा बलों का सम्मान बढ़ता है। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सीमाओं पर तैनात सुरक्षा बलों व राष्ट्र के अंदर की हिंसक घटनाओं का मुकाबला कर रहे सुरक्षा कर्मियों की कारगुजारी पर राजनैतिक हस्तक्षेप व फिजूल की टिप्पणी बंद की जानी चाहिए। इसलिए आज राष्ट्र को अवसरवादी, भ्रष्ट व अव्यवस्थित तंत्र के मायाजाल से बचाने के लिए देश की आंतरिक सुरक्षा को सुदृढ़ किए जाने की आवश्यकता है।

डा0 महेन्द्र सिंह मलिक
आई.पी.एस., सेवानिवृत,
प्रधान जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

सत् पर अडिग रहे महान जाट पूरण भगत सिंह

– तेजपाल सिंह

येषां न विद्या न तपो न दानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मश्त्यलोके भुविभारभूता, मनुष्यरूपेण मृगाश्यरन्ति।।

अर्थः जिन मनुष्यों में विद्या तप ज्ञान शील गुण व धर्म न हो वे मृत्युलोक में भारस्वरूप हैं। वे मनुष्य के रूप में पशुओं की भांति विचरण करते हैं।

जोगी संप्रदाय के अनगिनत सितारों में पूरण भगत ध्रुव तारे के समान हैं। वे सर्वाधिक अनूठे और वर्तमान समय में भी सर्वाधिक अर्थपूर्ण है। वे गोरखनाथ के परवर्ती आसन पर विराजमान होने के योग्य हैं। जोगी शब्द योगी का अपभ्रंश है जिस प्रकार यमुना का जुमना। उन्होंने मर्यादा, धर्म और चरित्र की स्थापना के लिए अपना सारा जीवन न्यौछावर कर दिया। वे ऐसे हैं जैसे हिमाच्छादित हिमालय। हिमाच्छादित पर्वत तो और भी है परन्तु हिमालय तो अतुलनीय है। इसी तरह पूरण भगत निराले पहाड़ के रू॰ में सुदृढ़ खड़े नजर आते हैं। उन्होंने आम लोगों को झकझोरा तथा आम जन के हृदय की वीणा को बजाया। उन्होंने उत्तम चरित्र के मानदण्डों को समझाने के लिये कठोर यातनाऐं सही तथा उन सख्त मानदण्डों के पालनप कर समाज को राह दिखाई।

आज भी उनकी पाकिस्तान, अफगानिस्तान, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तरप्रदेश में चरम प्रसिद्धी है। उनके ऊपर बने गीतों को लोग बड़ी श्रद्धा तथा स्नेह से सुनते हैं। इनका जन्म राजा सलवान तथा माता इच्छरां की कोख से हुआ। सलवान शालिवाहन से बिगड़ कर बना है। शालिवाहन शक वंश में उत्पन्न हुए थे और उन्होंने

सन्यास हृदय की एक स्थिति का नाम है। न कि किसी नियम या वेशभूषा का। – अज्ञात

विक्रमी सवंत् चलने के 135 वर्षों बाद शक सम्वत् चलाया था और वे शक कहलाये। शकों ने पौराणिक धर्म को अन्ध विश्वासों के कारण त्याग दिया था। वैदिक संपति नामक पुस्तक के लेखक पं. रघुनन्दन शर्मा (पृष्ठ 373) पर लिखते हैं 'शक भी पुराना शब्द है' 'नारिष्यन्त शकाः पुत्राः' वाक्य से प्रकट होता है कि शक इक्ष्वाकु का पौत्र था। शक इतना पुराना शब्द है कि यह ऋग्वेद में भी आया है। महाभारत के बाद शकों ने दकियानसी अंध विश्वासों के कारण पोराणिक धर्म को तिलांजली दे दी तथा बौध्द्ध धर्म की तरफ झुक गये जो कि प्शुबलि तथा नरबलि का विरोध कर रहा था। भगवान बुद्ध ने संस्कृत के श्लोकों का बिना जांचे परखे प्रमाण मानने से इन्कार कर दिया था। उन्होंने कहा था श्रद्धा से नही अनुभव की कसौटी पर किसी बात को तोल कर स्वीकार करो। शकों ने ईरान तुर्किस्तान सुदूर देशों तक धावे मारे तथा वहां पर भी बस गये। 'कुछ इतिहासकारों ने शकों को ईरान का आदिवासी मानकर उन्हें इंडो सिथियन लिखने की गलती की। ईरान तो शकों का उपनिवेश था। महाराजा कनिष्ठ शकों की शाखा शिवि वंश के थे। शिवि लोगों ने दान की बड़ी महिमा आज तक प्रचलित है। प्रो. कालिका रंजन कानूनगो ने 'हिस्ट्री आफ जाट्स' में महाराजा कनिष्क को जाट ही लिखा है। महाराज कनष्कि बोद्ध थे तथा शालिवाहन उनसे 150–200 वर्ष बाद इतिहास के परिदृश्य पर आते हैं। शालिवाहन कनष्कि की वंश परम्परा के उत्तराधिकारी थे जिस वंश में कालान्तर में शताब्दियों बाद रणजीत सिंह जैसा प्रसिद्ध महाराजा हुआ। महाराजा शालिवाहन के यहां तीन पुत्रों ने जन्म लिया। इच्छरां के पेट से पूरण तथा कुसुम (लुणा) के रसाल (रसालू) और यगुन्धरा। युगन्धर जिसे कि सिख इतिहास में जौध्नधार कहा गया है – के वंश में ही महाराजा रणजीत सिंह हुए थे। सन् 500 के आसपास तोरमाण हूण ने पंजाब पर चढ़ाई की और उसके पुत्र मिहिरकुल ने शालिवाहन के वंश की राजधानी स्यालकोट पर कब्जा कर लिया। युगन्धर का वंशज सोहान्द वहां से भाग गया। सन् 528 ई. में फिर सोहान्द का भाग्य फिरा और मन्दसौर के प्रसिद्ध जाट नरेश यशोधर्मा ने गुप्त राजाओं की सहायता से कहरूर के मुकाम पर हुणो को परास्त किया' (सिख इतिहास लेखक ठाकुर देशराज।)

'जाट जाति प्रच्छन्न बोद्ध है' नामक पुस्तक क लेखक डॉ. धर्मकीर्ति डी.लिट (पश्ष्ठ 66, 73, 80) पर लिखते हैं 'भारतीय उपद्वीप में जितने भी बोद्ध सम्राट कनिष्क की भांति शक जाति से संबंधित थे, दूसरे शब्दों में वे जाटों के पूर्वज थे। जाट जाति के पूर्वजों में सम्राट कनिष्क के बाद हर्षवर्धन का नाम आता है। वर्तमान जाट जाति को इस बात का गर्व अनुभव करना चाहिये कि उनके पूर्वज बोद्ध नरेश असुवर्मा नेपाल के प्रसिद्ध राजा हो चुके हैं।'

<u>पूरण भगत का कार्यकाल</u>

पूरण भगत के कार्यकाल की गणना उसके सौतेले भाई राजा रसालू के द्वारा युद्धों में प्रयोग किये गये लोह धनुष तथा वीरों के आधार पर 'Indus Saga' के लेखक अहतजाज एहसन (Aihtazaz Ahsan) ने की हैं (पृष्ठ 76, 77) अध्याय (Romance of Raja Rasalu) जिसे AD 200 से 400 के बीच सिद्ध किया है। इतिहास लेखक पाकिस्तान में प्रसिद्ध वकील तथा वहां की सरकार में मंत्री रहे है। देखें

It is dilaicult. but not llnpossible, to date the times of Raja Rasalu. No formal historical account, coin, statuette, or archeological remains survive to provide any clue. A well, between Sialkot and Kallowal, is still attributed to Puran's charm. Barren women, to this day go to its lip to pray for fertility. Legend claims that they are then blessed with sons.

That Rasalu was a Jat Raja of Siaikot, then a stronghold of the Sial tribe, is not vigorously disputed. The exact period of the Raja's life is, however, not easy to determine. But some facts seem to be beyond controversy. The frequent mention of iron tools and impiements in the versified folk takes composed in the ballads of Puran and Rasalu implies that the metal was in general and generous use at that time. Now, although it has been introduced into Indus by the lateAryans, The geu eral and widespread use of'ron had come about in the Ashokan and post-Ashokan era. It was in that period that the vast at expanse of the Mauryan empire, depending ÿþupon the Bihar deposits ofiron ore, provided the means for the metal's diffusion to all the corners of the subcontinent. Before the exploitation of the Bihar deposits, iron, being in short supply has been the metal ofthe elite. By Rasalu's time, it was in more popular use by all accounts of the legend. R asalu's is, therefore, a post-Mauryan episode.

Rasalu's is also a pre-Islarnic story. The legend contains no reference to Islam, or to any concept, object, saint, or hero associated with the Islamic tradition. The abundance of animism and Rasalu's in teraction with scores ofpeople, the ordinary folk and princesses, all with pre-Islamic names, established oveluh elmingly the period of the legend.

The exiled pth ce's companions as he starts his forced journey away from hone are two young lads, a goldmith's son and a carpenter's. This company indicates that society was substantially egalitarian. Indus had, therefore, not been feudalized as yet. The feudalizing suzerainty of the Gupta empire of the fourth and fifth

centuries AD was yet to exert its infuence, transforming Indus culture from the tribal to the feudal.

The post-Mauryan pre-Islamic, and prefeudalization saran erts place the Rasalu legend somewhere in the early centuries of the first milleniuni of the Christian era, more likely around Ad 200-400.

के.सी दहिया साहेब ने अपनी पुस्तक 'जाट–ईरान, समेर तथा सिन्धु की सभ्यता' में पूरण भगत का कार्यकाल भगवान बुद्ध के कार्यकाल से पूर्व का माना है। उनका तर्क है – अगर पूरण भगत का कार्यकाल इस्वीं सन् 200–400 के मध्य होता तो उसके पिता शालिवाहन तथा उसके भाई महान शेद्धा रसालू के सिक्के अवश्य मिलते है। अतएव उसा कार्यकाल बुद्ध से पूर्व ही है क्योंकि तब सिक्कों का प्रचलन नही के बराबर था।

पानी से भरी पीतल की टोकनियां जिसे लड़कियां तथ स्त्रियां कुएं से भरकर लाती थी रसालू तीर चला कर उन टोनियों में छेद कर देता था। रसालू के पिता ने कांस की टोकनियां बनवाकर उन लड़कियों को दी ताकि रसालू उनमें छेद न कर सके। आज भी पाकिस्तान में घर–घर में लड़कियां टोकनियों के छेदन के गीत गाती हैं अर्थात उस

समय कांसे का काल आ चुका था परन्तु उसका प्रयोग सामान्य नहीं था। जाटों में आज भी गांवों में जहां कुछ कुओं में ही मीठा पानी निकलता है लड़कियां तथा बहुएं गीत गाते हुए उन कुओं से पानी भर कर लाती हैं।

पूरण के जन्म के उपलक्ष्य में सारे शहर में खुशियां फूट पड़ी, दिए जलाए गये। आतिशबाजों ने रंग जमा दिए लेकिन अफसोस! ज्योतिषियों ने शालिवाहन से कहा – 'बारह वर्षों तक तुम अपने बेटे का मुंह मत देखना। यह तुम पर भारी है। पूरण भगत को देखने से अपशकुन होगा तथा तुम्हारें राज पाट का विध्वंश हो जायेगा। ज्योतिषियों की बातों से प्रभावित होकर राजा ने अपने पुत्र पूरण को वारह वर्षों के अंतराल के लिए तहखाने में डाल दिया।'

इस भयानक त्रासदि से राजा उदासी के अंधे कूप में समा गये। मन कीं लगता ही नहीं था सब उजड़ा–उजड़ा लगता था। राजा ने मन बहलाने के लिए लूणा नामक एक सुन्दर कनया से शादी कर ली। लूणा अत्यधिक खूबसूरत और आकर्षक थी। पंजाबी भाषा के महान कवि कादगार ने लूणी की सुन्दरता की प्रशंसा करते हुए कहा :

दिस्से सूरत चंद मेहताब जेही,
जंदो बैझी सी जेवर लाइके जी।
कादरयार की आखा सुणावसां मैं,

अर्थ : उसकी सूरत चांद जैसी थी। कादरयार कहता है कि उसकी सूरत का क्या ब्यान करूं, ज बवह जेवर पहन कर बैठती थी तो पक्षी भी उसके दर्शन के लिये नीचे आ जाते।

जब तहखाने में रहते बारह वर्ष गुजर चुके थे और पुरण का अवसाद का समय कट चुका था परन्तु भविष्य की गोद में तो कुछ और ही छुपा था। पिता ने दूसरी शादी भी रचा ली थी जो पूरण के लिये दुखद् घटना थी। अपनी मां रानी इच्छरां से मिलने के बाद जब पूरण अपनी सौतेली मां लूणा के महल में गया तो लूणा उसके भव्य रूप को देखकर मोहित हो गई क्योंकि लूणा भी जवान थी और हमउम्र। ऊपर से रूप का गुमान। पूरण का रूप और जवानी देखकर लूणा होश हवास खो बैठी। जब आदरपूर्वक पूरण ने लूणा को मां कहा, तो वह इस संबोधन को सहन नहीं कर सकी और कहा कि मैं तेरी मो नहीं, तेरी प्रेमिका हूं पूरण तू मुझे प्यार कर। उसके मनोभावों को पंडित लखमीचन्द ने कविता में इस प्रकार व्यक्त किया :

जिसकी कोख तै जन्म लिया तू उसने कहिए माता।
जुल्मी जोबन कामदेव मेरे ना काबू में आता।
नरक बीच में दर्जा होगा मेरी बात मोड़ीका।
सोलह साल की उम्र मेरी तू सै मेरी जोड़ी का।।
पूरणमल तू ऐश भोग ले, इस जिन्दगी थोड़ी का।
खिंची खिचाई खड़ी थान पै ना चढ़णियां घोड़ी का।।
मरू तिसाई पानी प्याके क्यूं न तपत बुझाता ।।1।।
एक पहर की लूणा दे तेरी साहमी सरपट कहै सै।
पूरणमल तेरा रूप देख कै मेरा मन भटकै से।
रूख पै मेवा पाक रही या नीचे ने लटकै सै।।
सेब संतरे अंगूर लागरे क्यू ना सुआं बणके खाता ।।2।।
जिस मरियां रहा रूप चमक जण कोयल कूके बण में।
पूरणल तेरा रूप देख मेरे उट्ठे झाल बदन में।
इस बूड़ढ़े ते भली कुंवारी दुख दिया जवानीपण में।।
पल्ला करके भीख मांगती मैं भिक्षुक तू दाता ।।3।।
विस्वे तीन मर्द के होते सतरह विस्वे नारी।
वीर मर्द का मेल बताया कह ऋषि मुनि ब्रह्मचारी।।
पोशक मकिए लाग रहै सै विछरे पलंग निवारी।
गुरू मानसिंह ख्याल करो कहां गई अकल तुम्हारी।
कामदेव की अगन बुझा दे लखमीचन्द कद गाता ।।4।।

पूरण ने लूणा द्वारा दिये गये प्यार के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। परिणास्वरूप लूणा के अंहकार पर भयानक चोट पहुंची। वह विषैले नागिन की तरह फुंकारने लगी। उसने पूरण पर झूठा आरोप लगाकर राजा को उसके विरूद्ध भड़काया और कहां कि पूरण मेरी इज्जत लूटना चाहता था। उसने मुझ बांह से पकड़ कर पलंग पर ढकेल दिया था। लेकिन मेरे शोर मचाने पर वह यहां से भाग गया। मन सब वृत्तियों का पुरोगामी है मानव मन कहीं तक भी गिर सकता है इसका अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। यह सुनकर राजा शालिवाहन आगबबूला हो गया तथा उसने पूरण के लिये मृत्युदण्ड का आदेश जारी कर दिया। जललाद उसे दूर तो ले गये परन्तु इतने सुन्दर राजकुमार की हत्या करने के लिए तैयार नहीं हुये। उन्हें उस बालक पर दया आ गई। नरम हृदय उन गुलामों ने राजा के आदेश का बस इतना ही पालन किया कि उस राजकुमार के हाथ पैर काट कर घने जंगल में एक कुएं (आज भी पूरण के नाम से जाना जाता है) में धकेल दिया। वे इतने सुन्दर तथा भद्र राजकुमार की हत्या कैसे कर सकते थे। कई दिनों तक पूरण उस कुएं में चुल्लू भर पानी पीकर ईश्वर का भजन करता रहा। प्रभु की ऐसी कृपा हुई कि एक दिन गोरखनाथ अपने चेलों के साथ देश–देशान्तर का भ्रमरण करते हुए उस कुएं के पास आ निकले। पानी पीने के लिए जब चेलों ने कुएं में रस्सी डाली तो भीतर से 'मुझे बचाओं' की आवाज आई। मैं स्यालकोट का राजकुमार पूरण हूं। गुरू गोरखनाथ ने पूरण को कुएं से निकाला तथा उसके हाथ पैर ठीक कर दिए। (क्या यह चमत्कार था या मेडिकल साईंस का प्रयोग) पूरण गुरू गोरखना का शिष्य बन गया। गुरू गोरखनाथ उसे अपने साथ अपने टीले पर ले गये। पूरण को जोगी बनाकर उन्होंने उसके कानों में छल्ले डाल दिये। पूरण के योग की परीक्षा लेने के लिये उसको समीप के एक शहर में रानी के महल में भिक्षार्थ भेज दिया। रानी अपनी सुन्दरता के लिये मशहूर थी। उसकी सुन्दरता का आलोक चारों ओर फैला हुआ था और उसका नाम भी सुन्दरा था। पूरण ने रानी सुन्दरा के महलों के नीचे जाकर अलख जगाई। रानी की दासियां भिक्षा डालने के लिये आई। व पूरण की सुन्दरता देखकर दंग रह गई। पूरण ने दासियों से भिक्षा लेने से इन्कार कर दिया और 'रानी से कहो कि खुद आकर भिक्षा दे।' दासियों ने पूरण की मोहक छवि का वर्णन करते हुये रानी को उसका संदेश भी दे दिया। रानी पूरण को देख मंत्रमुग्ध हो गई। उस पर मदहोशी का आलम छा गया। रानी हीरे–मोतियों भरे थाल की भिक्षा पूरण की झोली में डाल दी।

पूरण ने जब टीले पर जाकर वे हीरे–मोती गुरू गोरख के कदमों में अर्पित किये तो गोरखनाथ बोले 'बच्चा! हमने तुम्हें भोजन की भिक्षा

लाने के लिये कहा था न कि हीरे–जवाहरात की। ये हमारे किए काम के है।' अगले दिन पूरण ने रानी से भोजन की भिक्षा के लिए प्रार्थना की। मुग्धा रानी तो अब कहीं की कहीं निकल चुकी थी। रानी भोजन तैयार करवाकर दासियों समेत गुरू गोरखनाथ के टीले पर पहुंची। गोरनाथ रानी की सेवा सुश्रूषा से अति प्रसन्न हुये – 'बोले, क्या मांगना चाहती हो।' रानी ने पूरण को मांग लिया। गुरू की आज्ञानुसार पूरण सुन्दरा के महल चला तो गया परन्तु कहां इश्क, हुस्न की आग और कहां जोगी। पूरण महल छोड़कर खिसक गया और फिर गोरखनाथ के पास आ गया। सुन्दरां ने पूरण के वियोग में महल की खिडकी से कूदकर अपने प्राणों को त्याग दिया।

समय बीतने लगा वर्षों टल गये। एक दिन गुरू गोरखनाथ ने पूरण को अपने मां–बा पके दर्शन के लिए सियालकोट भेज दिया। पूरण शहर के बाहर बाग में ठहर गया, लोग आने लगे तथा पेड़–पौधों को पानी दिया जाने लगा, बाग हरा–भरा हो गया। पूरण की ख्याति फैलने लगी। लोग अपनी मन–मांगी मुराद पाने लगे। राजा शालिवाहन तथा रानी लूणा पुत्र प्राप्ति की इच्छा लेकर पूरण के पास आए और पुत्र प्राप्ति की प्रार्थनाा की। पूरण ने रानी को सीधे कहा 'अगर सन्तान चाहिये तो रहस्य को खोल दो।' 'सन्तान का लाच तथा जोगी का भय' – रानी ने अपना दोष स्वीकार कर लिया। यह सुनकर राजा शालिवाहन को इतना गुस्सा आया कि उसने लूणा को मारने के लिये तलवार खींच ली। लेकिन पूरण ने राजा को समझाया कि ईश्वर को ऐसा मंजूर था। राजा का गुस्सा ठंड़ा हो गया और पूरण भगत ने रानी को आर्शवाद दिया कि तुम्हें बड़ा बहादुर पुत्ररत्न प्राप्त होगा। पूरण की मां जो पुत्र वियोग में रो राकर अंधी हो गई थी जोगी की शोहरत सुनकर मिलने के लिए आ गई। पूरण को अपनी मां की दयनीय स्थिति देखकर बड़ा दुख हुआ। उसने मां को बता दिया – 'मैं तुम्हारा बेटा पूरण हूं मां बेटे का मिलन हुआ। राजा ने पूरण का राजतिलक करके सिंहासन पर आरूढ़ होने के लिए कहा। पूरण ने कहा िकइस सिहांसन पर मेरा भाई बैठेगा जो बड़ विस्तृत क्षेत्र पर राज करेगा। पूरण के भाई रसालू ने बड़े भ भाग को जीत लिया। उसने ईरान तक धावे बोले। उसका अधि ाकांश समय युद्धों में बीता और उसकी अनुपस्थिति में उससे छोटा भाई युगन्तर राजकार्य को संभालता था। बहता पानी और रमता जोगी एक जगह कहां ठहरते हैं। अपनी मां को फिर मिलने का वायदा करके पूरण गुरू गोरखनाथ के पास सत्य की खोज में निकल गया।

पाकिस्तान में स्यालकोट और कल्लोवाल के मध्य पूरण के कुएं में बांझ औरतें सन्तान प्राप्ति के लिए आज भी प्रार्थना करती हैं।

संदर्भ

1. किस्सा पंजाब	:	संपादन–भरभजन सिंह
2. सिख इतिहास	:	ठा. देशराज
3. Indus Saga	:	Aihtazaz Aihsan (Pak. Historian)
4. Jat-Iran, Sumer and Indus Civilzation	:	K.C. Dahiya
5. वैदिक सम्पत्ति	:	पं. रघुनन्दन शर्मा
6. जाट जाति प्रच्छन्न बौद्ध है	:	डा धर्मकीर्ति
7. जाट–इतिहास	:	ठा. देशराज
8. जाट–इतिहास	:	योगेन्द्रपाल शास्त्री
9. कैसेट (पूरणमल भगत)	:	कवि लखमीचन्द्र हरियाणा
10. कविताएं	:	कवि कादिरयार
11. पूरण भगत सत् पर अडिग रहे	:	माताजी द्वारा समृद्ध यादगार में बताया गया जबानी किस्सा पूरण भगत

शाकाहार व नशा मुक्ति

– डॉ० भूप सिंह भिवानी

संसार में एक भी व्यक्ति ऐसा नही है जो दुखी रहना चाहता हो अर्थात सभी सुखी रहना चाहते है। सुखी जीवन के लिए वैसे तो बहुत सी बातों का होना आवश्यक हैं, परन्तु सबसे महत्वपूर्ण बात है स्वस्थ शरीर, कहावत भी है पहला सुख निरोगी काया क्यों कि स्वस्थ शरीर की सहायता से दुसरी आवश्यक बातों को सम्भव किया जा सकता है। स्वस्थ शरीर के लिए भोजन व भोजन की आदतों का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। भोजन में शाकाहार और भोजन की आदतों में नशीली वस्तुओं से बचे रहना सबसे आवश्यक है। हम प्रस्तुत चर्चा में इन दो बिन्दुओं पर विचार करेंगे।

पहला बिन्दु है भोजन के बारे। भोजन को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा गया है – शाकाहार व मांसाहार। ह निर्णय करेंगे कि मनुष्य का भोजन कौन सा है। चर्चा के दूसरे बिन्दु में नशीली वस्तुओं से दूर रहने अर्थात नशा मुक्ति के बारे में विचार करेंगे। नशा न केवल स्वास्थ्य को प्रभावित करता है अपितु इसके गहरे आर्थिक–सामाजिक व राष्ट्रीय प्रभाव भी हैं। इसलिये नशा मुक्ति भी भोजन की तरह एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है।

नशा मुक्ति

नशा क्या है :– वह पदार्थ जिसके शरीर में जाने पर शारिरीक व मानसिक व्यवहार में अनतर आ जाता है और शरीर को नुकशान होता है। ऐसे पदार्थ को नशीला पदार्थ कहते है। (जैसे तम्बाककू, सुल्फा, गांजा, शराब, अफीम, चरस, हिरोइन, स्मैक व कुछ ड्रग्स आदि) और नशीले पदार्थ का सेवन नशा कहलाता है।

नशा क्यों करते है :– मुख्य रू‍ से दो कारण है। पहला कोई भी दुख की स्थिति में नहीं रहना चाहता। प्रत्येक व्यक्ति का प्रयास रहता है कि दुःख की स्थिति से मुक्ति मिले। मोटे तौर पर दुःख दो प्रकार का है – शारिरीक व मानसिक। दुःख की सिीति से बाहर आने के दो उपाय है, पहला यह कि शरीर व मन दुःख का अनुभव करना बन्द कर दें और दूसरा यह कि दुःख के कारण को हटा दिया जाये। दुःख से मुक्ति का दूसरा उपाय अर्थत कारण को हटाना श्रम साध्य (जिसमें परिश्रम करना पड़े) है व कुछ समय लगता है परन्तु पहला उपाय सरल है व परिणाम तुरन्त मिलता है। जितने भी नशीले पदार्थ है वे सब हमारी मानसिक व शरिरीक सवेंदना (महसूस अनुभव करने की

जिंदगी की जिम्मेदारी कोई बोझ की चीज नहीं है। वह आनंद से ओत–प्रोत है। – विनोबा भावे

सामर्थ्य) को कमजोर करते हैं, मन व शरीर को सुस्त, कमजोर व रोगग्रस्त बनाते हैं, तनावमुक्त हल्का या स्वार्थ नहीं बनाते। जन साध ाारण की मानसिकता होती है कि आसान रास्ता अपना लेते हैं। दूसरा कारण–संगत–सोसाईटी व परिवेश भी है जो नशे की तरफ ले जाता है। शराब के नशे के लिए मांसाहार भी जिम्मेवार है। परिवेश में नशीली वस्तुओं की उपलब्धता भी आ जाती है।

नशे के परिणाम :– विज्ञान की किसी भी पुस्तक में किसी भी प्रकार के नशे का शारीरिक या मानसिक लाभ नहीं लिखा है और अनुभव के आधार पर भी हम यह देखते हैं। तम्बाकू के सेवन से मूंह, गले व फेफड़े का कैन्सर होता है। शराब लीवर व स्नायु तंत्र कासे बरबाद करती है व अन्य नशे भी शरीर के किसी न किसी या सभी अंगों को नुकशान पहुँचाते है यह बात साधारण जन तक सभी जानते हैं।

मैं संक्षिप्त में यह कहूं कि नशे से शारिरीक, आर्थिक व सामाजिक हानि ही होती है लाभ कुछ भी नहीं होता तो आप सभी मेरे से सहमत होंगे। एक बहुत बड़ा नुकसान जिसकी तरफ आमतौर पर हमारा ध्यान नहीं जाता और जिसकी तरफ समाज के जिम्मेवार व्यक्ति व सरकारें भी गम्भीर नहीं है। वह है राष्ट्र हानि या मैं यह कहूं कि राष्ट्र द्रोह तो भी गलत नहीं होगा। जिस घर समाज या राष्ट्र का युवक नशे के कारण निष्क्रिय, रोगी–संवेदनहीन हो गया (नशा ये सभी काम करता है) उस घर–समाज व राष्ट्र को बर्बाद होने व गुलाम होने से कोई नहीं बचा सकता।

तो युवको नशे से बचना शारीरिक–आर्थिक–सामाजिक लाभ ही नहीं अस्तित्व से जुड़ा प्रश्न है, इसको गम्भीरता से लेकर स्वयं व मित्र–दोस्तों को नशे से दूर रखना राष्ट्र है और नशे में पड़ना राष्ट्र द्रोह है।

बचे कैसे :–

एक बात हमें पक्के तौर पर समझ लेनी पड़ेगी कि जब तक कारण रहेगा – कार्य होता रहेगा। यह प्रकृति का अटल नियम है इस नियम से ऊपर कोई नहीं हो सकता। नशा हमद ुःख से बचने के लिये करने लगे थे ना ? मित्रों–दुःख तो उसके कारणों काक हटाने से मिटेगा, नशे द्वारा भुलाने से नहीं। क्या कबूतर के आंख बन्द करने से बिल्ली भाग गई? एक बात और अच्छे से ख्याल में लेंलें कि नशा चाहे हल्का हो या तेज एक प्रभाव सभी पर डालता है और वह है लत। यदि आप यह सोंचे कि कुछ समय बाद नशा छोड़ देंगे अभी तो कर लेते हैं तो आप निश्चित तौर पर गलती पर है। कारणों को हटाने का प्रयास व नशा छोड़ना यह तो आपको तुरन्त प्रभाव से करना पड़ेगा।

कुछ लोग तर्क देते हैं कि नशा नहीं करेंगे तो कार्य नहीं कर सकते। उनका कहना केवल इतना ही ठीक है कि उनका शरीर नशे का आदि हो ुचुका है। नशा छोड़ने पर कुछ देर शारिरीक असुविध ाा हो सकती है पर कुछ देर बाद यह समस्या अपने आप कम हो जायेगी। यह भी निश्चित जान ले।

आपकी संगत या सोसाईटी के बारे एक बात निश्चित जाने कि कोई भी व्यक्ति जो आपको नशे के लिये प्रेरित करता है या नशे के साधन उपलब्ध करवाता है वह सात जन्म में भी आपका हितैषी नहीं हो सकता। ऐसी मित्रमंडली को छोड़ देने में ही भलाई है।

अन्तिम बात यह है कि सांप को मारने की अपेक्षा सांप की मां को मारा जाये ताकि आगे सांप पैदा ही न हो। कहने का अभिप्राय सरकारों को चाहिये कि कोई भी (किसी वस्तु की उपलब्ध इसकी इच्छा पैदा करत है) नशीली वस्तु नागरिकों को उपलब्ध ही न हो। यदि देश का युवक नशे व अश्लीलता में धंसा रहा और युवकों को संभाला नहीं गया और केवल भौतिक उन्नति को देश की उननति व मजबूती का आधार मानती रही तो सरकारों की हालत आंख बन्द किये कबूतर वाली ही है और मजबूत राष्ट्र का सपना ख्याली पुलाव ही होगा। खैर यह बाते तो सरकारों की हुई, हमें तो अपने आप को बचाना है तो नशे से बचना ही होगा नही ंतो बर्बादी तय है।

आंकड़ों पर विचार करें और स्थिति का मुल्याकंन करें –

1. तम्बाकू व मदिरा के सेवन से भारत में सर्वाधिक मूंह व गले के कैंसर वाले देशों में अग्रणी है।
2. ॅभ् के अनुसार 2020 तक तम्बाकू के सेवन के कारण विश्व में प्रतिवर्ष एक करोड़ 64 लाख लोग मौत के शिकार होंगे। वर्तमान में भारत में प्रतिवर्ष 20 लोग तम्बाकू से मर रहें हैं।
3. घूम्रपान से उत्पन्न धूएं में लगभग 400 विषेले रसायन होंते हैं। इनमें 43 प्रतिशत कैंसर उत्पन्न करने वाले हैं। एक बीड़ी–सिगरेट परने से 1–5 मि0 ग्राम निकोटिन विष खून में मिल जाता है।
4. धूम्रपान करेन वाले व्यक्ति में हृदय को दौरा पड़ने की संभावना अन्य व्यक्तियों के मुकाबले 23 गुणा अधिक होती है।
5. परोक्ष धूम्रपान से धम्रपान न करने वालों के मुकाबले कैंसर की संभावना 25 प्रतिशत अधिक होती है।
6. भारत में तम्बाकू से होने वाली बिमारियों पर 270 अरब रुपये प्रतिवर्ष खर्च होंते हैं। यह राशि तम्बाकू उद्योग से होने वाले लाभ से अधिक है।
7. म्रने वाले शराबियों में 9 प्रतिशत लिवर (जगर) सम्बन्धी रोगों से मरते हैं।
8. म्द्यपान के कारण पैंक्रियाज (प्लीहा) ग्रन्थी में सूजन आ जाती है जससे कम इन्सलिन बनने के कारण मधुमेह (शूगर) रोग होने की संभावना बहुत बढ़ जाती हैं।
9. थ्सरोसिस (जिगर की सूजन) जैसी भंयकर बीमारी ज्यादा मद्यपान के कारण होती हैं जिसमें रोगी तड़प–तड़प कर मरता है।
10. शराब से पेट में अम्ल बनता है जिससे पेट व आंतों में अल्सर हो जाती हैं।
11. शराब की आदत से इसी मात्रा बढ़ती चली जाती है जिससे विवे, संयम और मानसिक संतुलन घटता चला जाता है।
12. भारत में 120 करोड़ लीटर सालाना क्षमता की 165 शराब फैक्ट्रियां है। इनके अतिरिक्त अवैध उत्पादन भी होता है। प्रत्ये नागरिक करे प्रतिदिन आधा लीटर शराब उपलब्ध होती है जबकि दूध 120 ग्राम उपलब्ध होता है।
13. नेशनल इन्स्टीटयूट ऑफ मेन्टल हैल्थ एण्ड न्यूरो साईंस बंगलोर के अनुसार वर्ष 2003–2004 में शराब बिक्री से 216 अरब रुपये प्राप्त हुये जबकि शराब जनित बिमारियों एवं अन्य समस्याओं पर 244 अरब रुपये खर्च करने पड़े।

धैर्य रखना मुश्किल होता है, लेकिन उसका फल मीठा होता है। – ससो

14. इन्डियन मैडिकल एसोसियेशन दिल्ली के अनुसार महिलाओं से दुराचारी घटनाओं के लिये 60 प्रतिशत नशा जिम्मेवार हैं।

15. किसी भी धर्मग्रन्थ–मत–पंथ–सम्प्रदाय में नशों को ठीक नहीं बताया।

क) जो मनुष्य शराब पीता है उसके सब व्रत–तार्थ–नियम नरक में पड़ जाते हैं – गुरू नान

ख) शराब के अधीन होकर मनुष्य निदंनीय कम करता है – भगवान महावीर

ग) शराब से सदा भयभीत रहना क्योंकि यह पाप व अनाचार ही जननी है। – महात्मा बुद्ध

घ) शराब सब बुराईयों की जड़ हैं। – हजरत मोहम्मद

ड) रिजाघर जाने वाले हो तो कभी मद्यपान मत करना, न अपनी सन्तान को ऐसा करने देना।–ईसा मसीह

च) मैं मद्यपान को चोरी व वेश्यावृति से भी अधिक निन्दनीय कम मानता हू। – महात्मा गांधी

छ) मदिरा मनुष्य को राक्षक बनाती है। – महर्षि दयानन्द

16. देहात की जिन्दगी को शराब बर्बाद कर रही है।

17. इतिहास गवाह है कि नशे ने राज्यों तक को बर्बाद कर दिया है। युवकों अपने देश में सन् 1556 से पहलें कांग्रेस घास, 1970 से पहले काबली कीद्धर 1975 से पहले विदेशी नस्ल की तथाकथित गाय, 1990 से पहले बेरोजगारी व नशीली वस्तुओं का व्यापार ये भंयकर राष्ट्रीय समस्यायें नहीं थी। वर्तमान में युवक नशे व अश्लीलता में फंस गया है। इन विकट परिस्थितियों में अपने आप को बचाने के साथ पढ़े–लिखे लोगों का कर्तव्य बनता है ि कवे औरों को भी बचायें नही ंतो स्वामी विवेकानन्द की चुनौती 'जब तक लाखों लोग भूखे व अज्ञानी हैं मैं प्रत्येक उस व्यक्ति को गद्दा मानता हूँ जो उनके बलबूते आगे बढ़ा और अब उनकी तरफ ध्यान नहीं देता से बच नहीं सकेंगे।

18. चाय एक सस्ता सुलभ और समाज द्वारा मान्यता प्राप्त नशा है जो भूख और नींद को खा जाता है। चाय में शरीर के लिये कोई पोषक तत्व नहीं है। चाय में नशा करने वाले हानिकारक रसायन होते हैं जिनमें कैफीन एक है। डॉ. मेंडेलसन के अनुसार जो डाक्टर चाय–काफी पाने की राय देता है वह मरीजों का हितैषी नहीं। एक प्रमुख अमेरिकी दन्त चिकित्सक के अनुसार पश्चिमी देशों में दन्त क्षय का सबसे बड़ा कारण चाय–काफी है। चाय मधुमेह को बढ़ावा देती हैं। काफी–चाय की बड़ी बहन हैं।

19. यदि एक व्यक्ति बीड़ी–सिगरेट, पान मसाला, गुटका आदि पर प्रतिदिन 5 रुपये खर्च करता है और यदि इनकों छोड़ कर केवल 5 वर्ष की बचत को डाक्टर में डाल दे ंतो 58 वर्ष की आयु में उसे 26 लाख रुपये मिल जायेंगे। यदि शराब–चाय–कॉफी आदि को जोड़ा जाये तो यह बचत करोंड़ों में जायेगी।

20. म्युनिच (जर्मनी) जिसे विश्व का 'बियर कैपिटल ऑफ दी वर्ल्ड' कहा जाता है, वहाँ बीयर के अत्यधिक सेवन के ारण 15–18 वर्ष की आयु में मरने वालों की दर सबसे अधिक है।

21. नशा छोड़ने हेतु कैंसर हॉस्पिटल में जाकर कैंसर मरीजों को देखों जों जीने के लिये मौत से संघर्ष कर रहे हैं। उन में से बहुत से ऐसे हैं जो जीवन के लिये करोड़ों खर्च कर सकते हैं पर कैंसर उनका जीवन लेकर ही पीछा छोड़ती है।

देश भर में खेत-खलिहानों में किसानों की भुखमरी

– नरेश टिकैत

देश भर में कर्ज में डूबे किसान आत्महत्या कर रहे हैं। खेत में खून पसीना बहाकर भी लाभकारी मूल्य नहीं मिलने के कारण कर्ज बोझ से मुक्ति नहीं मिलने से परेशान हैं। गत माह महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश के किसानों ने उग्र आंदोलन कर हुकमरानों को ललकारा। इस आन्दोलन के दौरान मध्यप्रदेश के मण्डसौर में पुलिस द्वारा गोली चलाने से कई किसान मारे गये। इस कारण देश भर के किसानों में रोश पैदा हुआ। यू.पी. में भी किसानों का आक्रोश उफान पर चढ़ा। ऐसे तमाम अन्य ज्वलंत मुद्दो पर राष्ट्रीय सहारा बश्जेश जैन द्वारा भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौ. नरेश टिकैत से की गई बातचीत के प्रमुख अंश यहां प्रस्तुत हैं।

<u>महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश में पिछले दिनों किसानों के आक्रोश के लिये आप किसे जिम्मेदार मानते हैं ?</u>

मध्यप्रदेश में सुलगी आग दुःखद है किसी भी राज्य में किसान सड़क पर नहीं उतरना चाहते हैं। वे नहीं चाहते कि जनता उनके कारण परेशान हो। मध्य प्रदेश में किसानों ने सड़क पर उतर कर सत्ताधीशों को खुद की पीड़ा का आईना दिखाया तब मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने तानाशाही से किसानों की आवाज को दबाने की कोशिश की। कई किसानों को आंदोलन की राह पर शहादत देनी पड़ी जो समूचे देश के किसानों के लिए बेहद पीड़ादायक है।

<u>किसान राजनीति के पुरोधा एवं भाकियू मुखिया रहे महेन्द्र सिंह टिकैत की ललकार पर देश भर के किसान हुकांर भरते थे। अब किसान की ताकत कमजोर नजर आ रही है। इसकी क्या वजह है ?</u>

देखिये, सियासी दलों ने निहित स्वार्थ में किसानों का वोट पाने के लिए उन्हें जाति–धर्म में बांट दिया। किसान भी उनके जाल में फंस गए। अब किसान संगठित होकर अपनी पीड़ा और भावनाओं को लेकर सत्ताधीशों और नौकरशाहों को ललकारेंगे।

<u>राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में किसानों का अहम योगदान है वर्तमान में किसान कहां खड़े हैं ?</u>

इसका कारण यह है कि किसी समय भारत विदेशों से कटोरा लेकर खाद्यान्न की भीख मांग रहा था। किसानों ने खून–पसीना बहाकर देश को खाद्यान्न में आत्मनिर्भर ही नहीं बनाया बल्कि दूसरे देशों के लोगों के पेट की भूख शांत करने में सामर्थ्यवान भी बना दिया। इसके बावजूद सत्ता चाहे किसी दल की हो, किसानों को सत्ताधीशों ने लुभावने 'सब्जबाग' दिखाए मगर किसानों को उनकी फसल का लाभकारी मूल्य दिलाने को लेकर वे कभी संजीदा नजर

नहीं आए। यही वजह है कि किसान निरंतर कर्ज के बोझ तले दबते गए। कर्ज का दबाव नहीं सहने पर किसान मौत को गले लगाने को मजबूर हो रहे हैं।

भाजपा के सत्ता में आने के बाद क्या किसानों और खेत–खलिहान के हालात में कोई बदलाव आया ?

किसानों को तो कोई बदलाव का अहसास नहीं हो रहा। नरेन्द्र मोदी ने लोक सभा चुनाव के दौरान डॉ. स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को लागू करने फसल की लागत में 50 फीसदी मुनाफा जोड़कर लाभकारी मूल्य दिलाने का वादा भी किया था। केन्द्र में भाजपा सरकार बनने के बाद किसानों को इस सरकार से कुछ अच्छे दिन आने का भरोसा रहा। आज इस सरकार के तीन साल पूरे हो गए हैं। मगर किसान अभी तक अपनी बेबसी पर आंसू बहाने को मजबूर हैं। यूपी विधान चुनाव में भी किसानों ने भाजपा का 'कमल' सींचा। मगर राज में भी किसान फिलहाल खाली हाथ ही हैं।

वर्तमान दौर में गांव, किसान और खेतिहर मजदूर के क्या हालात है ?

गांवों में हालात बहुत भयावह हैं। किसी को खेती से भुखमरी मिल रही है । कृषि उपकरण, खाद, बीज सहित खेती में इस्तेमाल होने वाली चीजें निरंतर महंगी हो रही है जिससे गन्ना, गेहूं, दलहन, तिलहन, सब्जी सहित अन्य सभी फसलों की लागत बढ़ रही हैं। इसका लाभकारी मूल्य नहीं मिलने से खेती घाटें का सौदा हो गई है। सिर्फ खेती कर किसान अपने बच्चों को शिक्षा एवं स्वास्थ्य की बेहतर सुविधा देने में असहाय ही बने है। इससे किसानों के बेटों का खेती से मोह भंग हो गया है, नौकरी के लिए नौजवानों का गांवों से पलायन हो रहा है।

यूपी गन्ना उत्पादकों की बेल्ट है। क्या यूपी में निजाम बदलने के बाद गन्ना उत्पादकों को राहत मिली ?

देखिये, इस सरकार से उम्मीद तो थी। इस सरकार ने एक लाख रुपये तक की कर्ज माफी की घोषणा जरूर की है लेकिन यह अभी तक पूरी नहीं हुई है। चीनी मिल बकाया गन्ना भुगतान नहीं करने को लेकर तानाशाह बनी हुई है। योगी राज में भी किसान 14 दिन बाद भुगतान पर 15 फीसदी ब्याज के खुद को मिले संवैधानिक हक को पाने के लिए तरस रहे हैं। किसान पर कर्ज हो तो उसकी वसूली के लिए बैंक और सरकार सभी हथकंडे अपनाते हैं। मगर चीनी मिलों पर किसानों के कर्ज की वसूली कराने की कार्यवाही रस्म अदायगी भर हैं।

भाकियू के पास किसानों को संतुष्ट कराने का क्या फार्मूला है ?

आधी–अधूरी कर्ज माफी से किसान को फौरी तौर पर राहत मिल सकी हैं। मगर उसके भविष्य को संवारने का बस एक ही इलाज है। यह है कि उसे हर हाल में फसलों का लाभकारी मूल्य मिले। केन्द्रीय किसान आय आयोग अस्तित्व में लाने की जरूरत है। स्वामीनाथन आयोग के लाभकारी मूल्य की सिफारिश को देश भर में लागू किया जाए। देश में किसान संगठनों की सहभागिता से जलवायु और क्षेत्र के आधार पर राष्ट्रीय कृषि नीती बनानी चाहिए। सर्वदलीय बैठक में देश का कृषि एजेंड़ा तय हो। सत्ता चाहे किसी भी दल की हो, लेकिन इसी कृषि एजेंडे पर गांव, खेत–खलियान की विकास योजनाएं बनें और धरातल पर उनका कार्यान्वयन हो।

किसानों को आर्थिक तंगी से उबारने के लिए भाकियू की नजर में और क्या पहल होनी चाहिये ?

समूचे देश में एक बार किसानों को कर्ज से मुक्त किया जाए। उन्हें उसकी फसल का लाभकारी मूल्य दिलाया जाए। खेती में जुड़े सभी मंत्रालयों की कृषि कैबिनेट का गठन किसानों को अपेक्षित गन्ना भुगतान के लिए हर राज्य में गन्ना कोष बने। फसल बीमा योजना में किसान को इकाई माना जाए। गांवों से युवाओं का पलायन रोकने को ग्रामीण क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योग लगाने चाहिए। किसानों के हित में स्वीनाथन आयोग की सिफारिशों को लागू किया जाए।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl 24.5/5'1" M.A. Economics. Business man & Political family of Panchkula. Preference business man and politician. Avoid Gotras: Lakra, Panwar, Cont.: 09216000072
- SM4 Jat Girl (DOB 13.06.90) 27/5'2" B.Tech (CSE) Employed as Assistant in Central Excise Department at Chennai. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Joon, Cont.: 09780336094
- SM4 Jat Girl (DOB 01.12.90) 26.8/5'2" B.Sc (Computer Science), M.Sc (Math), B.Ed (Math) from MDU Rohtak Working in Tika Ram P.G. College (Lect) for 3 years. Avoid Gotras: Pannu, Duhan, Chahal, Cont.: 08901205312
- SM4 Jat Girl (DOB13.10.91) 25.10/5'5" B.A., LLB (Hons) LLM, Advocate in Punjab & Haryana High Court Chandigarh. No dowery seeker. Preferred match Chandigarh, Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal, Cont.: 09417333298
- SM4 Jat Girl (DOB 22.03.92)25.5/5'2" M.Com. Avoid Gotras: Hooda, Jaglan, Malik, Poria, Chahal, Doon, Deswal, Cont.: 09779238001
- SM4 Jat Girl (DOB March1990) 27.5/5'7" Convent educated, Post Graduate, Employed, Highly educated family. Please contact only well educated family. Tcicity (around Chandigarh) based family preferred. Avoid Gotras: Sura, Malik, Cont.: 09888626559
- SM4 Jat Girl 30/5'5" M.Sc., M.Phil. Pursuing Ph.D from P.U. Chandigarh, NET, JRF qualified. Avoid Gotras: Panghal, Dalal, Sangwan, Cont.: 09056770986, whats App 9888600668
- SM4 working Jat Girl 26/5'3" BPT, MPT, CMT Employed as Consultant Chysiotheraphy in private hospital in Panchkula. Avoid Gotras: Chhikara, Dahiya, Bajar, Cont.: 09467680428
- SM4 divorceed Jat Girl (DOB 03/1985)32.4/5'3" B.A., B.Ed., MSc. In Computer Science. Tri-City match preferred. Avoid Gotras: Hooda, Dahiya, Jatrana, Cont.: 09417467848, 0172-2573382
- SM4 Jat Girl (DOB 02.12.91) 25.8/5'5" M.Com, B.Ed. Employed as teacher in a private school at Zirakpur with Rs. 16000/- PM. Avoid Gotras: Kadyan, Jakhar, Malik, Cont.: 09815098264
- SM4 Jat Girl (DOB 29.12.88) 28.7/5'3" MBBS. Employed as Medical Officer. Avoid Gotras: Dahiya, Suhag, Sangwan, Cont.: 09464952715
- SM4 Jat Girl (DOB 21.04.88) 28.3/5'1" M.Tech from P.U. Chandigarh, GATE cleared. Avoid Gotras: Dhull, Goyat, Bhal, Cont.: 09467671451
- SM4 Jat Girl (DOB 15.09.92)24.10/5'4" Graduate with B.Sc. I.T. Doing Job in a reputed private company in Gurgaon. Avoid Gotras: Malik, Rathi, Dahiya, Cont.: 09211121447, 09211303770
- SM4 Jat Girl (DOB 15.08.89) B.Tech., M. A (English). Working as

PGT. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhanda, Cont.: 09417196763

- SM4 Jat Girl (DOB 14.09.88) 28.10/5'3" LLB, LLM. Pursuing Ph.D. Father ACP/Delhi Police. Avoid Gotras: Sangwan, Gahlian, Dabas, Cont.: 09810212200, 08750871193
- SM4 working Jat Girl 24.6/5'7" B.Tech, MBA, Preference Defence Officer. Avoid Gotras: Chhikara, Chhillar, Dalal, Tomar, Shokeen, Cont.: 09313662383, 09313433046
- SM4 Jat Girl (DOB 23.10.87) 29.8/5'5" B.Com, MBA, MIS, M.A (Economics.) Avoid Gotras: Panghal, Baloda, Bhaghasra, Cont.: 09463967847, 09463969302
- SM4 Jat Girl(DOB 07.02.90) 26.10/5'10" B.Tech (ESE) M.Tech (ESE) from MDU Rohtak. GATE qualified. Avoid Gotras: Kadian, Rathee, Sangwan, Cont.: 08447796371
- SM4 Jat Girl (DOB 05.12.86) 30/5'5" M.Sc. Geology Employed as Class-I Gazzeted Officer at G.S.I. Govt. of India at Dehradun. Fathr School Lecturer, Mother Housewife. Avoid Gotras: Kundu, Rathee, Malik, Cont.: 08950092430
- SM4 Jat Girl (DOB 19. 09. 91) 25.8/5'3" B.Tech. Employed in Management & Management Co. Pune. Avoid Gotras: Deswal, Malik, Rathi, Sangwan, Cont.: 08427945192
- SM4 Jat Girl (DOB 30.06. 89) 27.10/5'4" B.Sc, BA, M.A. with History, CTET, HTET cleared, Employed in Chandigarh Police. Avoid Gotras: Gehlawat, Dahiya, Ohlan, Cont.: 08930157656
- SM4 Jat Girl 26/5'3" Master of Philosophy, Doing job in private Hospital. Avoid Gotras: Duhan, Chhikara, Bajar, Cont.: 09467680428
- SM4 Jat Girl (DOB19.07.90) 26.8/5'4" M.A. Sanskrit, P.Phil from P.U. Chandigarh. NET quqlified, CTET, HTET cleared, Pursuing PhD from P.U. Chandigarh. Paper clered for Junior Lecturer in Haryana government. Father Government employee. Avoid Gotras: Duhan, Kundu, Sehrawat, Cont.: 09416620245, 09467632314
- SM4 Jat Girl 26/5'5" B.D.S. Employed in Parexel Company in I.T. Park Chandigarh. Family settled at Chandigarh. Tri-city match preferred. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Sandhu, Cont.: 09779721521
- SM4 Jat Girl 30/5'2" B.A. Lab. Technician. Own business, Employed as Manager in Multi Coop. Society Bank at Sonepat. Family settled at Sonepat. Avoid Gotras: Saroha, Khatri, Malik, Cont.: 09466944284
- SM4 professionally qualified manglik Jat Girl, M.A. English, Self Employed, (DOB 24.04.87) 30.1/5'1" Earning Rs. 7-8 P.A. Match preferred in tricity, Avoid Gotras: Atri, Vohara, Cont.: 09988268021
- SM4 Jat Girl (DOB 04.08.90) 26.8/5'4.5" MCA from P.U. Chandigarh. Employed as Software Developer in MNC Industral Area Chandigarh), Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Sinhmar, Cont.: 09463330394, 09646712812
- SM4 Jat Girl (DOB 29.02.92) 25.2/5'4" MSc Physics from P.U. Chandigarh. Pursuing B.Ed. Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Sinhmar, Cont.: 09463330394, 09646712812
- SM4 Jat Girl (DOB 10.10.90) 26.6/5'8" B.Com, CA. Doing Job in a private reputed company. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Thalor, Beniwal, Pachar, Cont.: 09915577587
- SM4 (divorcee issuless) Jat Girl (DOB August, 1987) 29.8/5'6" M. Tech. in Computer Engineering. Employed as Assistant Professor in Engineering College, Landra (Pb.). Avoid Gotras: Sangroha, Lohan, Panghal, Cont.: 09464141784, 09780683938
- SM4 Jat Girl 28/5'7" B.Tech.in Electronic & Communication. PG Diploma in wireless networking from Torento (Canada). Avoid Gotras: Gaglan, Savant, Dhull, Dhull, Cont.: 09211218999
- SM4 divorced Jat Girl (DOB 11.05. 87) 29.10/5'4" PhD (Thesis submitted) MBA, UGC, NET, M.A. (Economics). Employed as Assistant Professor in a reputed College under I.P. University Delhi with Rs. 8.5 Lakh package PA. Father Professor, Government Employee. Avoid Gotras: Lohchab., Jaitain, Nandal, March preferred residing in Delhi and from Jat Community only. Cont.: 09416831895
- SM4 Jat Girl (DOB 05.09.91) 25.3/5'6" M.Tech (CSE) Employed in a University. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Rana, Cont.: 07696844991
- SM4 Jat Boy (DOB 05.06.88) 29.2/5'11" Employed as Computer Programmer in Food & Supply Deptt. Kaithal. Familay settled in Kaithal. Six acre Agriculture land. Avoid Gotras: Ravish, Sheoran, Badu, Kala, Cont.: 09729867676
- SM4 Jat Boy 28/5'8" LLB, Practising Advocate, Own house, plot, flat, 3 acre agriculture land. Father Senior Advocate. Avoid Gotras: Balyan, Nehra, Cont.: 09996844340, 09416914340
- SM4 Jat Boy (DOB 16.08.88) 29/5'10" MA (Public Admn.) Employed as Govt. JBT Teacher at Panchkula. Avoid Gotras: Dhillon, Siwach, Swag, Cont.: 09417424260
- SM4 Jat Boy (DOB. 1.8.82)35/5'9" M. A. (Eng.) M.A Mass Communications, M.Phil mass communications and Ph.D mass communications from K.U.K. Working as Deputy Chief Reporter in Dainik Jagran with Rs.35000/- P.M. Avoid Gotras: Malik, Gahlawat. Cont.: 09416616144, 08901447789
- SM4 Jat Boy (DOB 16.02.90) 27.4 /5'8" B.Tech. Mechanical. Employed in TATA Business Support Services Ltd. Mohali. Avoid Gotras: Kajla, Kaliramna, Khyalia, Cont.: 09915791810
- Suiotable match for Jat Boy (DOB 25.12.91) 25.6/6'2" Employed as J.E. in Corporation Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Vigay, Rajan, Cont.: 0172-4185373
- SM4 Jat Boy (DOB 02.05.91) 26.1/6', BA, JBT, CTET cleared, Pursuing B.Ed. Employed in IDBI Bank. Avoid Gotras: Kundu, Dahiya, Dalal, Cont.: 09888120102
- SM4 Jat Boy 29/5'11" Employed as team leader in IT Park Chandigarh with Rs. 8 lakh package PA. Avoid Gotras: Khatri, Ohlyan, Rathee, Cont.: 09833286255, 09468463165
- PQM4 handsome Jat Boy 30/5'10" MBA (finance) from France. CFA, B.Tech (PEC). DHA level three cleared. Employed in MNC at Mumbai with good package. Family settled at Panchkula. Only son. Avoid Gotras: Mor, Gehlawat, Rathee, Cont.: 08360609162
- SM4 Jat Boy (DOB13.08.89) 27/5'10" B. Tech. from India, M.Tech from Canada. Doing Job in TRONTO (Canada). PR status. Avoid Gotras: Sarao, Basiana, Ojaula, Cont.: 08288853030
- SM4 divorced Jat Boy (DOB 04.12.81) 35.6/5'11" M. Com, MFC, MBA, Own business. Avoid Gotras: Tehlan, Budhwar, Hooda, Cont.: 09782178687
- SM4 Jat Boy (DOB13.08.89) 31.7/6'1" MA, Mass Communications from London. Working in MNC Gurgaon with 12,5 lakh package PA. Avoid Gotras: Dahiya, Ahlawat, Cont.: 09717616149
- SM4 Jat Boy 29/5'11" MBBS, MS Artho. Working in Government Hospital. Avoid Gotras: Dahiya, Nandal, Cont.: 09812043188
- SM4 HPCL Hr. Officer (DOB 11.11.89) B.Tech, MBA. Package Rs. 12 lakh. Avoid Gotras: Kharb, Dabas, Bhanwala, Cont.: 09728576011
- SM4 Jat Boy 30/5'9" B.Tech, MBA (UK) Marketing Manager, 60 lacks PA. Avoid Gotras: Tomar, Poriya, Cont.: 09412834119
- SM4 Jat Boy 30/5'10" MBA, Working in MNC, CTC 14Lpa, Preferred B.Tech, MBA/Lecturer, Avoid Gotras: Panwar, Kadian, Dalal, Cont.: 09810280462
- SM4 Jat Boy Oct.89, 5'10" B.Tech. CS. Working in Nida, MNC, Preferred working girl. Avoid Gotras: Nain, Sirohi, Cont.: 09810983708
- SM4 Jat Boy (08.098.87), 5'6", B.Tech. Avoid Gotra : Thalor, Bhakar, Beniwal. Cont.: 9888966100
- SM4 Jat Boy (30.12.89), 5'7.5", Master Degree, worker as Sr. Software Engg., Pkg. 4.5 Lakh. P.A., Avoid Gotra : Kundu, Chahal, Dalal. Cont.: 8872486362

अहंकार से तप नष्ट हो जाता है और इधर–उधर कहने से दान निष्फल हो जाता है। – मनु

इतिहास पुरूष चौधरी छोटूराम व पत्रकारिता

– दलजीत सिंह आर्य

जादू वह जो सिर पर चढ़कर बोले। बस ऐसा ही व्यक्तित्व था इतिहास पुरूष चौधरी सर छोटूराम का, जो कि अपने युग में विशेष रूप से तत्कालीन पंजाब में और सामान्य रूप से उत्तरी भारत में बहुचर्चित रहे। बहुचर्चित व्यक्तित्व अनेक प्रकार के विवादों के पचड़े से बच नहीं सकता। उसका समूचा जीवन उसका जीवन न होकर उसके युग का सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक इतिहास होता है। इंसान अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है उसके अंदर इतनी शक्तियां छुपी पड़ी हैं कि यदि वे जागृत कर ली जाये तो वह एक आदर्श जीवन बना सकता है। फर्श से अर्श हो सकता है। इतिहास पुरूष सर छोटूराम उक्त बातों का एक जीता जागता उदाहरण है। जब भी वे भाषण देते थे तो भाषण के प्रारंभ में एक शेर कहा करते थे 'खुदी को बुलंद कर इतना कि हर तकदीर से पहले, खुदा बंदे से पूछे कि बता तेरी रजा क्या है।' डॉ. इकबाल के इस प्रसिद्ध शेर को सर छोटूराम ने पूर्ण रूप से अपने जीवन में चरितार्थ किया। एक साधारण किसान के परिवार में पैदा होकर अपने दृढ़ संकल्प, सख्त परिश्रम, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और लग्न से एक सफल वकील, सफल पत्रकार, ओजस्वी विचारक तथा सफल मंत्री रहकर आजम कहलाएं। उन्होंने न केवल अपने भाग्य को बनाया बल्कि दूसरों की तकदीर भी बदल कर अमर हो गये तथा दीनबंधु कहलाए। चौ. छोटूराम के युग में तत्कालीन विशाल पंजाब में तीन जातियों हिन्दु, मुसलमान और सिख का वर्चस्व माना जाता था। इस वर्चस्व की स्थिरता के लिए तीनों ही शासन तंत्र को यह दिखाने का प्रयास करते रहे हैं कि पंजाब के शासन में उनका सहयोग ही सभी समस्याओं के लिए अचूक औषधि है। 'फूट डालो और राज करो' के मूलमंत्र के पुजारी अंग्रेजों के लिये पंजाब की स्थिती सदा ही 'बंदर बांट' की नीति के कारण अनुकूल रही है। चो. छोटूरा के युग में पंजाब का आर्थिक ढ़ांचा उलझी अर्थव्यवस्था पर आधारित था। यह अर्थ व्यवस्था एक तरफ किसान और मजदूर से संबंधित थी तो दूसरी तरफ इसका सीधा संबंध व्यापारी वर्ग से था। इसमें पहला वर्ग सीधा किसानों से संबंध रखता था जिनकी जनसंख्या बहुत ही अधिक थी। दूसरा वर्ग अल्प संख्या में होने पर भी अर्थबल की शक्ति से निर्दयतापूर्वक शेषण करने वाले व्यापारी वर्ग से था। व्यापारी वर्ग से किसान वर्ग की मुक्ति की कहानी ही वास्तव चौ. छोटूराम के जीवन की कहानी है। जिस प्रकार कार्लमार्क्स के साम्यवादी रूप में सिद्धांतवाद से निकलकर क्रियात्मक रूप में सोवियत जन राज्य के रूप में प्रकट हुई। उसी भांति चौ. छोटूराम के विचार से पंजाब की संयुक्त जमींदारा सरकार में साकार हुई जिससे राष्ट्रीय एकता व भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को बल मिला। उनकी विचारधारा भारत के 80 प्रतिशत खेतीबाड़ी पर निर्भर रहकर गुजारा करने वाले नागरिकों का प्रतिनिधित्व करती है। खेती पेशा लोगों के लिए चौ. छोटूराम की वाणी में एक जादू था। उन्होंने जो कुछ किया और जो कुछ कहा और जो कुछ 'जाट गजट' अखबार के माध्यम से लिखा उससे देहातियों में अपूर्व चेतना पैदा हुई। गरीब मजदूर किसान केवल जाट नहीं थे अपितु उसमें विभिन्न जात बिरादरियों के व्यक्ति शामिल थे।

चौ. छोटूराम ने कांग्रेस से त्यागपत्र देकर पंजाब के इन सभी धर्मों के देहातियों को संगठित कर एक आर्थिक राजनैतिक मंच बनाया। इसी मंच से 'जमीदार एकता के नारे' ने देहातियों में अपने हानि लाभ को सोचने की, समझने की प्रवृत्ति ही नहीं अपितु अपना अनुपातिक भाग शासन में प्राप्त करने की सामार्थ्य पैदा कर दी। पंजाब सरकार में वे कृषि उद्योग माल कानून आदि विभिन्न मंत्रालयों के कुशल संचालक किसान वर्ग की भलाई के लिए संघर्ष करते रहे। उन्होंने जो सुनहरी कानून बनाये। उनसे विशाल पंजाब के जनसमूह में जो आर्थिक अंतर था वह बहुत कम हो गया और लोगों में राष्ट्रीय एकता बढ़ी, स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए लोग जागरूक होने लगे। कांग्रेस ने स्वाधिनता के पश्चात इस देश के विकास की दिशा में जो कुछ करने की योजना बनाई थी, चौ. छोटूराम ने बहुत पहले वह सब कुछ कर देने का दरादा कर लिया था। उनका यह सुनिश्चित विचार था कि आर्थिक उत्थान के बिना सिर्फ राजनीति स्वाधीनता एक कल्पना मात्र है। इसके लिए उन्होंने तीन काम बड़ी मजबूती से किये, एक यूनियनिस्ट पार्टी को मजबूत बनाया, दो पत्रकारिता क्षेत्र में 'जाट गजट' द्वारा बेचारा किसान लेखमाला जैसे लेखों से वैचारिक क्रांति पैदा की, तीसरा संघर्ष करते हुए लगभग 25–26 वर्ष तक पंजाब की राजनीति में तहलका मचाये रखा, न स्वयं चैन से सोए और न विरोधियों को चैन से बैठने दिया तथा पंजाब कौंसिल में सुनहरी कानून पास कराये और तुरंत लागू किए। जिनमें नौ कानून निम्नलिखित है, जिन्हें पास कराने में वे सफल हुए : 1. द पंजाब रेगूलेशन एकाऊन्ट्स एक्ट 1929, 2. द पंजाब रिलीफ ऑफ इंडेटेडनरेस एक्ट, 3. द पंजाब रजिस्ट्रेशन आफॅ मनीलेण्डा एक्ट 1936, 4. द पंजाब डेटर्स प्रोटेक्शन एक्ट 1936, 5. द पंजाब क्नसोलीएशन लेण्डस एक्ट 1936, 6. द पंजाब रैस्टीट्यूशन ऑफ मोर्टगेज्स लैण्ड एक्ट 1930, 7. द पंजाब ग्राम पंचायत एक्ट 1939, 8. द पंजाब कृषि उत्पाद मार्केटिंग एक्ट 1939, 9. द पंजाब ट्रैड एम्पालाइज एक्ट 1940। एक अकेले व्यक्ति के दिमाग से निकले ये तमाम कानून चौ. छोटूराम के शानदार काम का प्रतिनिधित्व करते है। ये कानून उनके अनगिनत प्रंशसकों द्वारा उनके ऊपर की गई अनेक खिताबों की वर्षा 'रहबरे आजम', 'दीनबंधु' इतिहास पुरूष, किसानों के मसीहा, छोटूराम आदि को पूरी तरह सही ठहराते हैं।

चौ. छोटूराम रोहतक की हरियाणवी बोली में भाषण दिया करते थे, इसका नतीजा यह निकला कि उनके श्रोता किसान उनके हरेक शब्द तथा वक्य को बड़ी आसानी के साथ समझ लिया करते थे। चौ. छोटूराम की रोहतक की बोली में कही गई बातों की लहर पूरे विशाल पंजाब तक पहुंची। विशेष रूप से किसान प्रधान

क्षेत्र लुधियाना तथा लायलपुर ने इन लहरों का अनुभव अधिक किया। इसका नतीजा यह निकला कि वे जमीदार लोग के मजबूत गढ़ बन गये। चौ. छोटूराम की बातें और उनके कार्य इतने अधिक प्रभावशाली थे कि उनके असर को रोक पाना असंभव था। चौ. छोटूराम से पहले भी शहीद ए आजम भगत सिंह के चाचा सरदार अजीत सिंह ने किसानों के आन्दोलन 'पगड़ी संभाल जट्टा' आंदोलन कर सन् 1907 से 1909 में मध्य नेतृत्व किया था। उस समय लायलपुर की जनसभा में यह गीत सबकी जुबान पर था। 'पगड़ी संभाल जट्टा' पगड़ी संभाल जट्टा, पगड़ी संभाल ओए। लुट्ट लिया माल तेरा, हालो बेहाल ओए। फसलां नूं खा गए कीड़े, तन ते नहीं तेरे लीड़े। भुक्खां ने खूब नयेड़े, रोंदे ने बाल ओए। पगड़ी संभाल जट्टा, पगड़ संभाल ओए। हिंद है मंदिर तेरा, इस दा पुजारी तू। कब तक झल्लेगा तू, एक हदी रव्वरी नूं। लड़ने ते मरन दी, कर ले तैयारी तू। पगड़ी संभाल जट्टा, पगड़ी संभाल ओए। अंग्रेज गर्वनर माईकल ओडवायर इण्डियन सिविल सर्विस द्वारा नियुक्त होकर सन् 1885 में पंजाब में आये। सन् 1901 से 1908 तक उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत में राजस्व कमीश्नर रहे और 1913 से 1919 तक पंजाब के लेटिनेंटगर्वनर रहे। इनके गलत कानूनों को ही चौ. छोटूराम ने संशोधित कर किसान को बचाया। पंजाब न्यू कालोनीज एक्ट बनाकर किसानों का शोषण हो रहा था, उसके विरूद्ध लायलपुर जंग आदि में यह किसान आंदोलन था। इस आंदोलन के अनेक नेता 15–16 वर्ष बाद सन् 1923–24 में चौ. छोटूराम के किसान आंदोलन में साथ रहे, लायलपुर के वकील चौ. शाहबुदीन थे जिन्हें चौ. छोटूराम ने पंजाब कौंसिल का अध्यक्ष बनाया था। सरदार भगत सिंह के पिता चौ. किशन सिंह थे जो सन् 1937 में पंजाब कौंसिल के अमृतसर से विधायक चुने गए और चौ. रामभजदत्त आर्य समाजी नेता भी किसान आंदोलन में सक्रिय थे। अतः चौ. छोटूराम के 'जाट गजट' और उनके भाषणों का असर उक्त क्षेत्र में पड़ा क्योंकि यह क्षेत्र पहले से आंदोलित था।

चौ. छोटूराम ने पत्रकारिता के अपने अनुभव से व यूनियनिस्ट पार्टी के मंच से व अपने सुनहरी कानूनों से सारे पंजाब में तहलका मचा दिया। पांच सूत्री कार्यक्रम बनाकर वे सफल हो गए। पांच सूत्री कार्यक्रम .....

1. रिश्वत खोरी तथा भ्रष्टाचार के खिलाफ हर तरह से तथा हरेक स्तर पर विरोध करना।
2. सूदखोर महाजनों तथा सरकार द्वारा किसान जनता के शोषण के खिलाफ प्रचार तथा संघर्ष करना।
3. धार्मिक कट्टर वादियों के गलत तथा झूठे धार्मिक सिद्धान्तों के प्रति जनता को जागरूक बनाना तथा शिक्षित करना।
4. जाति और धर्म की चिंता किए बिना जनता को सिर्फ आर्थिक मंच पर संगठित करना।
5. प्रदेश की जनता का सरकारी सेवाओं तथा निर्वाचित सदस्यों द्वारा व्यवस्थित एवं शासित पब्लिक संस्थाओं में समुचित प्रतिनधितत्व निश्चित कराना।

इन पांच सूत्रों वाले प्रयोग का मुख्य उद्देश्य देहाती जनता को एक सुनयोजत आंदोलन में बदलना था। इसे चौधरी आंदोलन में बदलना था। यह चौ. छोटूराम के उर्बर मस्तिष्क की उपज था। इस योजना को सबने पसंद किया। उक्त योजना की सफलता के लिए सबसे सशक्त साधान समाचार पत्र ही प्रतीत हुआ इसलिए उन्होंने जाट गजट साप्ताहिक प्रारंभ कर दिया। दृढ़ निश्चयी लोगों की सहायता भगवान भी करता है इसी को सत्यनिष्ठ, सदाचार वाले परिश्रमी लोग भगवान के दर्शन होना समझते है। इन्हीं दिनों चौ. छोटूराम के परमहितैषी मातनहेल गांव के राय साहब चौ. कन्हैयालाल कार्यक्रम अथवा अखबार संचालन की योजना सुनकर उनके पास आ गये। चौ. छोटूराम ने समाचार पत्र संचालन की योजना उनके सामने रखी। यह योजना श्री कन्हैया लाल को अच्छी लगी और उन्होंने उसके लिए चौधरी साहब को 1500 रुपये दे दिए। उस समय सन् 1916 के वर्ष में यह एक बहुत बड़ी राशि थी। इसके तुरंत बाद जाट गजट सन् 1916 में ही प्रारंभ कर दिया गया। आरंभ में चौ. छोटूराम स्वयं संपाद बने परन्तु अपने व्यस्तताओं के कारण उन्हें अनुभव हुआ कि अखबार के संपादन का कार्य किसी विश्वस्त व योग्य व्यक्ति को सौंपा जाना चाहिए। चौ. छोटूराम ने पंडित सुदर्शन को संपादक का काम दे दिया। पंडित सुदर्शन जी आगे जाकर हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द परम्परा के प्रसिद्ध कहानीकार बने। 'बाबा भारती का घोड़ा' उनकी कहानी मैंने सन् 1964–65 में पढ़ी थी जो गुरूकुल कागंड़ी विश्वविद्यालय के हिन्दी पाठ्यक्रम में 10वीं कक्षा में लगती थी।

एक दिन पंडित सुदर्शन जी जाट गजट के कार्यालय में जा रहे थे। मार्ग में एक पादरी लोगों को ईसा का उपदेश दे रहा था। पंडित सुदर्शन आर्य विचारधारा के व्यक्ति थे और चौ. छोटूराम ने उन्हें आर्य समाजी होने के कारण की अपने समाचार पत्र का संपादक नियुक्त किया था क्योंकि उन दिनों यह प्रसिद्ध था कि आर्य समाजी देशभक्त होता है, ईमानदार व सत्यनिष्ठ होता है तथा उसकी वैदिक विचारधारा में आस्था रहती है। वह उच्च चरित्र का धनी होता है। वह पादरी लोगों को ईसा का उपदेश देते हुए कह रहा था कि ईसा में विश्वास रखो और वह तर्क देकर हिन्दु धर्म पर प्रहार कर रहा था। यह बात पंडित सुदर्शन को अखरी और वे वैदिक धर्म और ईसाई मत की तुलना पर भाषण देने लगे। इस घटना का समाचार अंग्रेज जिलाधीश रोहतक के पास पहुंचा। उसने जाट गजट की जमानत जब्त करके नई जमानत मांग ली। जब इस बात का पता चौ. छोटूराम जी को लगा तो वे चौ. लालचन्द एडवोकेट (भालोट) को साथ लेकर जिलाधीश से मिले। बातचीत के सिलसिले में उन्होंन कहा कि विश्वयुद्ध में तोपों के सामने लड़ने वाले हम हैं और जमानत भी हमारे अखबार की जब्त हो, यह क्या अन्धेर है ? जिलाधीश ने कहा कि या तो अपनासंपादक बदलो, अन्यथा नई जमानत जमा करानी पड़ेगी। संपादक को क्यों हटाया जाए ? यह पूछने पर जिलाधीश ने पादरी वाली घटना चौधरी साहब को बता दी। यह बात सुनकर चौधरी साहब ने कहा कि मैं संपाद को बिल्कुल नहीं बदलूगा, उसका कोई

दोष नहीं है। किन्तु पंडित सुदर्शन जी स्वयं ही कुछ महीनों के बाद संपादक के पद से त्यागपत्र देकर चले गए। उनके पश्चात पंडित बिशम्बरनाथ शर्मा झज्जरवाले इसके संपादक बनाये गए जो चौ. छोटूराम के कट्टर विरोधी पंडित श्रीराम शर्मा के पिता थे। आर्य समाजी भी नहीं थे। इन दोनों संपादकों, पंडित सुदर्शन व पंडित बिश्म्बर नाथ, के समय भी संपादकीय लेख प्रायः चौ. छोटूराम ही लिखा करते थे। इसके पश्चात तीसरे संपादक चौ. मोलड़सिंह बनाए गए। वह बड़े उग्र स्वभाव के थे और संपादक के रूप में अपना दायित्व न निभा सके। इसके पश्चात् सन् 1924 में चौ. शादीराम जाट गजट साप्ताहिक के संपादक बनाए गए और उनके बाद चौ. छोटूराम दलाल को संपादक का कार्यभार सौंपा गया। वे अधिक योग्य तो नहीं थे। दलाल गोत्र के कारण उनकी उपयोगिता समझी गई क्योंकि चौ. छोटूराम के चुनाव क्षेत्र में दलाल और अहलावत जाटों के दो गोत्र उनके पक्के समर्थक थे। चौ. छोटूराम दलाल की मृत्यु के उपरान्त जाट गजट स्वामित्व के विषय में विवाद उठ खड़ा हुआ और न्यायालय से चौ. धर्मसिंह बीएससी एलएलबी के पक्ष में निर्णय हुआ।

चौ. छोटूराम रहबरे आजम के युग तक यह जाट गजट साप्ताहिक यूनियनिष्ट पार्टी का, जाट महासभा का, जमीदार के दुःख दर्द का, चौ. छोटूराम का, जाटों का, मजदूर व किसान प्रमुख वक्ता और प्रतिनिधि रहा।

एक लेखक पत्रकार मिस्टर हयूगो का कथन है "जो मनुष्य चुप हैं, मैं उनकी चुप्पी के कारणों का वकील बनूंगा, मैं गूंगों की वाणी बनूंगा, मैं छोटे से लेकर बड़े तक, निर्बल से लेकर सबल तक सभी की ओर से बोलूगा। मैं इनकी तुतलाहट की व्याख्या करूंगा, मैं सभी निराश लोगों की तरफ से बोलंगा। मैं भीड़ की बड़बड़ाहट, कुलमुलाहट और गुनगुनाहट का दुभाषियां बनूंगा।" यह कथन जाट गजट पर पूरा उतरता है। वस्तुतः उपर्युत मान्यता की पुष्टि जाट गजट के 10 दिसंबर 1916 के अंक से भी इस प्रकार होती है "बहुत बड़ी संख्या में हिन्दु, मुसलमान और सिख जाट जाति से संबंध रखते हैं। हम अखबार को जाट जाति की सामाजिक आर्थिक और शैक्षणिक स्थिति के सुधार हेतु सरकार का ध्यान आकर्षित करने का वाहन बनाना चाहते है और इसके द्वारा अपने राजनैतिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना चाहते हैं।"

जाट गजट वस्तुतः चौ. छोटूराम के युगग की जाटों के संबंध ा में पाई जाने वाली प्रत्येक स्थिति का महाभारत' है। इसमें लिखी 'बेचारा जमींदार' नामक लेखमाला 'गीता' के समान है। जाट गजट ने किसानों के उत्थान में बड़ा भारी योगदान किया। इस समाचार पत्र ने सन् 1916 से ही सोई हुई देहाती जनता को उठाने का सशक्त अभियान चलाया। इसी अभियान के कारण सरकारी अधिकारियों को जाट गजट के विषय में अनेक प्रकार की शंकाएं होने लगी। जिला रोहतक डिप्टी कमिशनर जमन मेहन्दी खान ने सितम्बर 1921 में मुख्य सचिव पंजाब सरकार को एक पत्र लिखा। इस पत्र में जाट गजट अखबार के विषय में लिखते हुए कहा कि "मैं आपको वास्तविक स्थिति से परिचित कराना चाहता हूं। आपको मालूम है कि आजकल चौ. छोटूराम की जमींदार लींग और कांग्रेस में कोई अन्तर नहीं है। इनका समाचार पत्र 'जाट गजट' प्रायः कांग्रेस के समान ही सरकार के विरूद्ध प्रचार कर रहा है।"

सन् 1933 ई0 तक भी सरकारी अधिकारियों की 'जाट गजट' के विषय में दुर्भावनाएं दूर नहीं हुई थी। अपनी दुर्भावनाओं और संदेहों को प्रकट करते हुए जिला रोहतक प्रशासन ने लिखा था कि 'जाट जाति के उत्थान के लिए आरम्भ किया गया चौ. छोटूराम की पार्टी का अखबार 'जाट गजट' बिना भेदभाव के सरकारी अधिकारियों पर आक्षेप करता है और यह अखबार प्रायः कांग्रेस रूझान का ही है।'

'जाट गजट' में प्रकाशित होने वाली चौ. छोटूराम जी के लेखों के आधार पर जिलाधीश रोहतक ने सन् 1933 में इस अखबार को साम्यवादी विचारों का प्रचारक तक माना था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि 'जाट गजट' में प्रकाशित चौ. छोटूराम के कई लेखों को साम्यवादी विचारधारा की व्याख्या के रूप में लिया जा सकता है। जैसे 'जाट गजट' में साम्यवाद के प्रचारक नौजवान सभा के नेता कामरेड रामकिशन को उद्धृत करते हुए कहा गया था कि 'हम गोरे बनियों के स्थान पर काले बनियों का राज नहीं चाहते। हम चाहते हैं कि किसान और मजदूर ही भारत पर शासन करें।'

सन् 1938 में चौ. छोटूराम ने भी हू–ब–हू ऐसा ही नारा लगाया था। 'जाट गजट' में प्रकाशित बेचारा जमींदार नामक लेखमाला से तो अधिकारियों को यह स्पष्ट झलकने लगा था कि चौ. छोटूराम ने अंग्रेजों के इस सिद्धान्त को कि 'भूमि का स्वामी राज्य और उस पर खेती करने वाले व्यक्ति मुजारे है।' का प्रतिवाद किया था। जिलाधीश ने इस लेखमाला में प्रचारित भूमि के सम्बन्ध ा में करों (टैक्स) की असमानता को अंग्रेजों के प्रति असंतोष फैलाने का संदृश माना।

अधिकारियों का यह विचार था कि इस लेखमाला द्वारा चौ. छोटूराम किसानों को सरकार के विरूद्ध भड़काकर बगावत करवाना चाहते हैं। जिलाधीश रोहतक ने 26 जुलाई तथा 30 अगस्त 1933 में 'जाट गजट' में प्रकाशित चौ. छोटूराम के व्यक्तव्य को कि 'पढ़े लिखे व्यक्तियों को दायित्व बनता है कि वे इस लेखमाला को अपने अनपढ़ किसान साथियों को पढ़कर सुनाएं बगावत की भूमिका के रूप में ग्रहण किया। इसके साथ–साथ जिलाधीश इस बात से भी चितित थे कि यह अखबार बहुत बड़ी संख्या में जिला रोहतक के स्कूलों में जाता है और बच्चों के मन पर किसानों के प्रति प्रेम उत्पन्न करेगा और वहां सरकार के प्रति घृणा का भाव जगाएगा।

'जाट गजट' में बाजार में ठग्गी की सैर लेखमाला में 'पुलिस गंज' की सैर नामक लेख लिखकर चौ. छोटूराम ने पुलिस में फैले भ्रष्टाचार की ओर ध्यान आकर्षित किया। चौ. छोटूराम की भाषा चुस्त और दुरूस्त थी, लिखने की शैली प्रभावात्मक होने के साथ जादुई असर डालती थी। चौ. छोटूराम कलम के धनी थे। यदि वे राजनीति में न आकर मात्र संपादक और लेखक के रूप में ही अपना

व्यक्तित्व स्थापित करते तो यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि वे पत्रकारिता एवं लेखन के क्षेत्र में बहुत सशक्त हस्ताक्षर छोड़ जाते। 'जाट गजट' उन्हें कितना प्रिय था, इसकी एक झलक सन् 1932 ई0 में उनके द्वारा प्रकाशित एक अपील से प्रकट होती है 'मैं उन लोगों की सूची रख रहा हूं जिनको जाट गजट की सहायता के लिए लिखा जा रहा है और यदि वे इस अखबार की सहायता नहीं करेंगे तो भविष्य में मुझ से किसी प्रकार का अनुग्रह प्राप्त नहीं कर सकेंगे।

सत्य तो यह है कि चौ. छोटूराम की आरम्भ से ही समाचार पत्रों में रूचि थी। स्कूल में पढ़ते हुए वे 'पैसा' नामक समाचार पत्र पढ़ते थे। कालेज के दिनों में विपिन चन्द्र पाल–लाल–बाल की पत्रिका के लिए चौ. छोटूराम लेख लिखते थे। संस्कृत के प्रोफेसर रघवर दयाल के समझाने पर ही उन्होंने विवादास्पद लेख लिखने बंद किए थे।

सन् 1907 में सैंट स्टीफन कालेज दिल्ली की स्टाफियन पत्रिका में अंग्रेजी में सर सी एफ इंड्रूज के कहने पर पत्रिका के प्रवेशांक के लिए 'दी इंप्रूवमेंट ऑफ इंडियन विपेज लाईफ' (भारतीय ग्राम्य जीवन में सुधार) नामक लेख लिखा था। जो बड़े अंग्रेज अधिकारियों ने पढ़ा और उनकी योग्यता की प्रशंसा की। यहां पर यहां भी बता दें कि कालेज की पढ़ाई के बाद चौ. छोटूराम ने कुछ समय तक कालांकाकर रियासत के राजा रामपाल सिंह के यहां उनके निजी सचिव के तौर पर रहते हुए राजा साहब के समाचार पत्र 'हिन्दोस्तान' के संपादन में छोटूराम ने बहुत बड़ा योगदान किया था। राजा साहब चिन्तामुकत थे कि छोटूराम युवक हिन्दु, उर्दु, अंग्रेजी तीनों भाषाओं में लिखने व बोलने की योग्यता तो रखता ही है, साथ ही तीनों भाषाओं का प्रभावशाली वक्ता भी है।

(अपराजेय भारत से साभार)

जरूरत है आर्थिक जीवन की ओर बढ़ने की

– अनामिका

आज स्वयं अपने ही रचे गए चक्रव्यूह में फंसते चले जा रहे हैं। मनुष्य आज अपने किये कराये में खेद अपने ही विरूद्ध खड़ा होता दिखाई पड़ रहा है। उसके आचरण जिस सुख के महत्वकांशी लक्ष्य की प्राप्ति के इरादे से आगे बढ़ रहे हैं, वह आचरण ही उसे उसके मनचाहे लक्ष्य से दूर करता जा रहा हैं। यह जरूर है कि आम तौर पर इस विसंगति का हमें कोई अंदाजा ही नहीं लगता। मन के ऊपर एक भ्रम–सा बना रहता हैं कि हम चल रहे है, और हमारी यात्रा ठीक दिशा में आगे बढ़ रही हैं। जब हम महज रूप से उपलब्ध प्रकृति की ओर देखते हैं, तो वहां की स्थिति हमें आशा नहीं बांधती, वह और नाजुक हुई जा रही है। प्रकृति या निसर्ग पर हमारा पहरा बैठता जा रहा है, और उसे भी सांस लेने की मनाही हो रही है क्योंकि विकास किया जाना है। नदी हो या पर्वत, सागर हो या मैदान, सबके जीवन के ऊपर विकास की तलवार लटक रही है। खुदाई और कटाई के सहारे विकास (और कमाई !) का राज–मार्ग प्रशस्त हो रहा है। इसका घातक परिणाम इस रूप में सामने आ रहा है कि हम लोग नैसर्गिक चीजें जैसे मिट्टी, पानी, हवा, जंगल सब कुछ तेजी से खोते चले जा रहे हैं। जीवन के सभी आधार बड़े पैमाने पर तेजी से अशुद्ध और प्रदूषित होते चले जा रहे हैं। वाराणसी में गंगा और आगरा, दिल्ली में यमुना का जल अपेय हो चुका है।

हरिद्वार में भी गंगा जल की गुणवत्ता बहुत घट गई है। इन सबकी जगह विकास की गवाही देते हर जगह कंक्रीट के जंगल उग रहें हैं। शुद्ध हवा की जगह हवा शोध यंत्र के सहारे जीने का उपक्रम कर रहे हैं। गांव खत्म हो रहे हैं। खेती का हिसाब ऐसा हो रहा है कि किसान को परता ही नहीं पड़ता। लागत निकालने तक के लाले पड़ जाते हैं। वहां से युवा वर्ग का बड़े पैमाने पर रिस्थापन जारी है। नगरीकरण की सारे गांवों का भविष्य बनता जा रहा है। बाजार तेजी से पांव पसार रहा है।

शहर की चपेट में आ रहे गांव शहरी आदतों और स्वादों के आदी हो रहे हैं। साथ ही स्वावलंबन की भावना भी कम होती जा रही हैं क्योंकि जीवन के जिन नए विधि–विधानों को हम अपना रहे हैं, और मूल्यावान मान रहे हैं वे गांव के हैं ही नहीं। शहर से तुलना करते हुए गांव अपने को उन्नीस ही पाते हैं। संस्कृति को मटियामेट कर हम बड़े–बड़े बांध बना रहे हैं, जो हद से हद पचास साल चलेंगे। उसके बाद ? पता नहीं। एक समस्या के हल के लिए दूसरी समस्या खड़ी करते जा रहे हैं। पर हम है कि कहीं कोई अंतविरोध नजर ही नहीं आता। आता है तो किसी मजबूरी में नजर–अंदाज कर देते हैं। दवा ज्यों–ज्यों कर रहे हैं, मर्ज बढ़ता ही जा रहा है। विज्ञाना एवं तकनीक के भीषण मोह जाल में फंसे हम अभी अपने वर्तमान की चिंता करते हैं। सामने आये क्षण को बचा रहे हैं। सब आश्वस्त हो रहे हैं कि अततः सब ठीक हो जाएगा। और तकनीकी संसाधन बन रहे हैं, और जिस तरह जो हो रहा है उसकी कीमत बहुत ज्यादा है। जीना सचमुच बहुमुल्य हुआ जा रहा है क्योंकि जरूरी साज–सामान कीमती हुए जा रहे हैं। सब के बस के नहीं रहे। वह सब जो कभी प्रकृति की नेमत था, अब सहजता से उपलब्ध नहीं है। पशु, पक्षी, वृक्ष, फूल–फल सब गायब होते जा रहे हैं, जो बच रहे हैं वे निर्जीव और गंधहीन हैं। सहज उगा यानी 'आर्गेनिक' जो विष और प्रदूषण से मुक्त है, महंगा होता है। बाजार के नियम में फायदा हर हाल में व्यापारी का ही होगा। हां खरीददार को डिस्कांउट मिलेगा गर खुल कर खर्च करे तो।

विकास विनाश के जरिये ही आ रहा है, जो अल्पकालिक सुख का दिलासा जरूर देता दिखता है पर अंततः विनाश की तरफ ही अग्रसर है। विनाश थोड़ा दूर जरूर है, इसलिए साफ दिख नहीं रहा। उसका अनुमान भी हम कायदे से नहीं कर पाते और तात्कालीन सुख में डूब–उतरा रहे हैं। उसकी आहट भी सुनने की फुरसत नहीं रही।

किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है। – स्वामी विवेकानंद

जाट समाज क्यों? और कैसे?

– आर.एस. फौजदार

वर्तमान भारतीय संस्कृति विभिन्न सभ्यताओं का सम्मिलन है, परंतु विविधता में भी एक आकर्षण बिंदु सदा रहता आया है और उसी की प्रेरणा से यह धारा अविरल अक्षुण्ण रही है। भारतवर्ष में आज समाजवाद तथा लोकतंत्र को आदर्श मानकर राष्ट्र को दिशा दी जा रही है। एक ओर प्रजातंत्रीय विकेंद्रीकरण का नारा भी है, वहीं दूसरी ओर पूंजी और सत्ता के केंद्रीयकरण के तत्व भी सक्रिय हैं। देश के राजनेता जातिवाद को राष्ट्रघाती कहते हैं, परंतु उनकी राजनीति के लिए यही जातिवाद 'रीढ़ की हड्डी' है। इसी की बुनियाद पर उनका महल खड़ा है। इस प्रकार राजनीतिज्ञों के साध्य और साधन में एकरसता नहीं है। वह एक ओर जातिवाद के उन्मूलन का नारा देता है, परंतु दूसरे ही क्षण वह उसे अपना साधन मानने में नहीं हिचकिचाता। बिडंबना यह है कि जब तक वह समाज का व्यक्ति है। तब तक जाति उसके लिए कुछ है और वही व्यक्ति है जब राजनीति का जामा पहन लेता है तो फिर सबसे पहले वह 'जाति' से ही घश्णा करता है फिर उसकी जाति 'राजनेता' हो जाती है।

ऐसी परिस्थितियों में ये आवश्यक है कि व्यक्ति, जाति, समाज, राज्य, राष्ट्र के संबंधों को हम समझें। पुराने समय में जब कभी भी जातियों का चलन हुआ होगा वह किसी के द्वारा यों ही जबरदसती थोपा नहीं गया होगा। उसका प्राकृतिक रूप से विकास हुआ है। हमारी सामाजिक व्यवस्था ने उसे मान्यता दी है। उसी के परिणामस्वरूप आज की स्थिति में हम आ पाये हैं। हम यह नहीं कह सकते हैं कि अब तक हमने कोई तरक्की नहीं की है। निश्चय ही हम आगे बढ़े हैं। इसलिए यह मानना ही पड़ेगा कि भूतकाल में जाति बिरादरी की व्यवस्था से समाज ने प्रगति की है। अब क्या यह व्यवस्था रातो–रात खराब हो गयी। या हमें बहकाया जा रहा है? या कुछ लोगों ने अपने स्वार्थवश इस व्यवस्था में व्यवधान पैदा कर दिया? ये प्रश्न चिन्ह हैं जिन पर हम समय–समय पर विचार करेंगे।

जहां तक 'जाट समाज' का प्रश्न है तो जाटों के इतिहास को देखते हुए हम कह सकते हैं कि जाट एक जाति नहीं थी बल्कि एक वर्ग विशेष को 'जट्ट' कहा गया। यों आज भी जाट हिंदू, मुसलमान, सिक्ख, बौद्ध, पारसी आदि सभी धर्मों में पाये जाते हैं। जाटों का इतिहास बताता है कि जाट प्रारंभ ही से मानवाधिकारों के हामी तथा प्रजातंत्रीय प्रणाली के विश्वासी रहे हैं। दूसरे शब्दों में 'राष्ट्रवादी रहे हैं राज्यवादी नहीं' परंतु आज "लोकतंत्री समाजवाद" की हवा गर्म है तब क्या हम प्रजातंत्रवादी रह सकते हैं? वैसे तो लोकतंत्र और समाजवाद का पारस्परिक कोई संबंध ा है ही नहीं, परंतु फिर भी राजनैतिक वर्ग खींच–तान करके उसका नया रू॰ सामने रखना चाहता है। यहीं से हमारे सामने प्रश्न चिन्ह लग जाते हैं। क्या हमें समाजवाद को आंख मींच कर मान लेना चाहिए? या प्रजातंत्रीय मूल्यों को जीवित रखने के प्रयास करने चाहिए? क्या अब तक जो हमारा स्वरूप राष्ट्रीय स्तर पर उछाला जाता रहा है वह ठीक है? या उनको सही ढंग से रखने की आवश्यकता है? यहीं पर यह भी प्रश्न उठता है कि क्या हमें 'जाति संगठन केवल जाति के लिए ही बनाने चाहिए या जाति संगठन की एक शक्ति पैदा करके उसे राष्ट्र सेवा में अर्पित करना चाहिए? आर्यान पेशवा राजा महेंद्र प्रताप जी (जोकि अखिल भारतवर्षीय जाट महासभा के अध्यक्ष भी हैं) का विचार है कि जाट जाति को संगठित होकर दूसरी जातियों के साथ सद्भाव, प्रेम व भाईचारा स्थापित करना चाहिए। संगठन का प्रयोग राष्ट्र के विकास के लिए करना है। हमें वसुधैव कुटुम्बकम् तथा 'जीओ और जीने दो' के सिद्धांतों को आदर्श मानकर अपने समाज को विचारशील बनाना चाहिए।

इस प्रकार ही सामाजिक शिक्षा तथा स्वतंत्र विचार विमर्श के लिए हमारे पास कोई उपयुकत साधन होना चाहिये चूंकि अब जाटों में भी शिक्षितों का प्रतिशत बढ़ता रहा रहा है परंतु उनकी प्रतिभाओं को अनुकूल अवसर नहीं मिल पाता। हम अपनी समस्याओं पर एक सामान्य विचार उत्पन्न करने के लिए सामान्य मंच की अनिवार्यता का अनुभव करते हैं। इसी विचार से प्रेरणा लेकर "जाट समाज" पत्रिका का जन्म हुआ है। इस संबंध में वयोवश्द्ध पत्रकार और लेखक श्री रमेश वर्मा जी का सहयोग और शुभ कामनाएं हमें प्रापत हैं।

आशा है कि "जाट समाज" के प्रेमी शुभचिंतक तथा वयोवृद्ध अपना आशीर्वाद तथा प्रेम देकर आज की विषम परिस्थितियों में "जाट समाज" की सभ्यता, संस्कृति और इतिहास को अक्षुण बनाये रखने के लिए प्रयास में पूर्ण सक्रिय योग देकर उत्साहित करेंगे।

आवश्यक सूचना

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला के किसी सदस्य अथवा 'जाट लहर' मासिक पत्रिका के किसी पाठक को अगर पत्रिका की प्रति सुचारू तौर से नहीं मिल रही है तो वे कृप्या अपने क्षेत्र के सम्बन्धित डाक विभाग से 'जाट लहर' पत्रिका की डिलवरी/प्राप्ति के सम्बन्ध में शिकायत या छानबीन कर सकते है जिनका विवरण निम्न प्रकार से है :–

मण्डल मुख्यालय	दूरभाष नं.
1. वरिष्ट अधिक्षक डाक कार्यालय, अम्बाला	0171–2641533
2. वरिष्ट अधिक्षक डाक कार्यालय, करनाल	0184–2273101
3. अधिक्षक डाक कार्यालय, कुरूक्षेत्र	01744–220820
4. अधिक्षक डाक कार्यालय, सोनीपत	0130–2241807
5. अधिक्षक डाक कार्यालय, रोहतक	01262–230206
6. अधिक्षक डाक कार्यालय, हिसार	01662–232050
7. अधिक्षक डाक कार्यालय, भिवानी	01664–243140
8. अधिक्षक डाक कार्यालय, गुरूग्राम	0124–2333021
9. अधिक्षक डाक कार्यालय, फरीदाबाद	0129–2416597
10. पोस्ट मास्टर, सैक्टर–8, पंचकूला	0172–2563622
11. पोस्ट मास्टर, सैक्टर–4, पंचकूला	0172–2563253
12. पोस्ट मास्टर, एम.डी.सी, पंचकूला	0172–2557373

इसके इलावा 'जाट लहर' पत्रिका की सुचारू तौर से डिलवरी/प्राप्ति हेतू आप अपना पूरा डाक पता जाट सभा की ईमेल : jat_sabha@yahoo.com पर अथवा जाट भवन कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

महासचिव

अहंकारी का विनाश जरूर होता है। – तुलसीदास

सरकार द्वारा स्वामीनाथन आयोग की सिफारिश माननी चाहियें

किसानों को लागत से डेढ़ गुना दाम देना मुश्किल क्यों ?

– राज किशोर

क्या किसान भारत माता की सौतेली संतानें हैं? इतनी आत्महत्याओं के बाद भी केन्द्र और राज्य सरकारों की आंख नहीं खुल रही है तो इसका एक ही अर्थ निकलता है कि भारत के शासक वर्ग ने किसानों का जीवन नष्ट करने का फैसला कर लिया है। बेशक, कुछ राज्यों में खेती खुशहाली ला रही है, लेकिन शेष भारत में यह दरिद्रता फैला रही है। अपनी परेशानियों से निजात पाने के लिए जो किसान आंदोलन करते हैं, उन्हें गोलियों से भून दिया जाता है। बीच–बीच में कर्ज माफी का ड्रामा चलता रहता है, लेकिन इस पर विचार नहीं किया जाता कि किसान की ऐसी स्थिति होती क्यों है कि वह कर्ज ले, लेकिन उसे चुका न पाएं ?

किसानों की समस्याएं क्यों हैं ? खेती अलाभकर क्यों होती जा रही है ? इसके दर्जनों उत्तर हैं, और स्वामीनाथन कमेटी ने अपनी चार रिपोर्टों में इनकी तरफ पर्याप्त संकेत किया है। आश्चर्य यह है कि सरकार किसानों की हालत का पता लगाने के लिए राष्ट्रीय आयोग गठन करती है और कठिन परिश्रम के बाद वह आययोग अपनी विस्तृत रिपोर्ट देता है, तो सरकार का कोई अफसर उसे पढ़ता भी नहीं, न संसद में उसकी चर्चा होती है। बस उसका अकादमिक महत्व रह जाता है। दूसरी तरफ, सरकार को जो फैसले लेने होते हैं, जैसे नोटबंदी और जीएसटी आसानी से ले जाते हैं। कोई आयोग बैठाने की जरूरत नहीं होती।

स्वामीनाथन कमेटी की वह मुख्य सिफारिश है कि किसानों को फसल की लागत का डेढ़ गुना अदा किया जाना चाहिए। सरकार ने इस पर अभी तक अपनी प्रतिक्रिया जाहिर नहीं की हैं, लेकिन भाजपाध्यक्ष ने उसे अव्यावहारिक घोषित किया है। क्यों अव्यावहारिक है यह ? विभिन्न वेतन आयोगों के माध्यम से सरकारी कर्मचारियों को, जिन्हें वैसे भी अन्य नागरिकों से ज्यादा पारिश्रमिक मिलता है, दिन–प्रतिदिन अमीर बनाने के लिए पैसा है, बड़े–बड़े उद्योगपतियों का करोड़ों रुपयों का कर्ज माफ करने के लिए पैसा है, उनके सूट बूटों के लिये लाखों खर्च करते हैं। लेकिन सरकार के पास किसानों के लिए पैसा नहीं है।

विडम्बना यह है कि किसानों को लागत से डेढ़ गुना दाम देना एक ऐसी चीज है, जिसके लिए सरकार को अतिरिक्त कोष की जरूरत भी नहीं है। इसकी कीमत देश के लोग ही चुकाएंगे, जिनमें किसान खुद भी शामिल होगा। किसान किसी की कृपा भी नहीं चाहता। दुगुना–तिगुना दाम भी नहीं मांग रहा है, जिस कीमत पर अधिकांश औद्योगिक उत्पाद बिकते हैं। उसकी मांग इतनी भर है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य को लागत के डेढ़ गुने पर लाया जाए। देश में आम मुनाफाखोरी की स्थिति को देखते हुए मुनाफे का यह अनुपात जायज है। इसमें किसानों में अमीरी नहीं आ जाएगी। पर वे भुखमरी के शिकार भी नहीं होंगे। ऐसा किया जाता है, तो इससे भारत की अर्थवयवस्था को लाभ ही होगा। सबसे पहले तो करोड़ों किसानों का जीवन खुशहाल होगा। देश का सामान्य संतुष्टि स्तर ऊंचा उड़ेगा, जो अंततः किसी भी शासन का मुख्य लक्ष्य होता है। गांवों के बच्चे स्कूल–कॉलेज जा सकेंगे। तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे।

सबसे बड़ा फायदा होगा कि मांग की एक पूरी नई दुनियां खुल जाएगी। हम जिस बीस या तीस मध्य वर्ग पर इतना इतराते हैं, वह अस्सी–नब्बे प्रतिशत तक जा सकता है। आज भारत के अधिकांश उद्योग लगभग ठप हैं। उनका बाजार विस्तृत नहीं हो रह है। कुछ वर्षों से ग्रामीण क्षेत्र में औद्योगिक उत्पादों की मांग बढ़ी है, लेकिन वह इतनी नहीं है कि अर्थव्रूवस्था को गति दे सके। यह तो तभी संभव है जब सभी किसानों की जीवन खुशहाल बने। अभी भारत की अर्थव्यवस्था सिर्फ आधे बाजार पर टिकी हुई है। जब पूरा बाजार खुलेगा, तो देश में एक तरह की क्रांति आ जाएगी। घाटा सिर्फ यह दिखाई देता है कि शहरी मध्य वर्ग के लिए जीवन थोड़ा कठिन हो जाएगा। महंगाई से वह पहले से ही परेशान है। किसानों को उनकी उपज का उचित प्रतिफल मिलेगा तो दाल, चावल, आटा, मसाले, सब्जी सभी कुछ और मंहगे हो जाएंगे। लेकिन क्या यह तथ्य नहीं है कि अब तक कृषि उपज के मूल्य को कृत्रिम ढंग से दबा कर रखा गया है? इस तरह गांव–शहरों के उपनिवेश बन गए हैं, जिनके शोषण पर यह अर्थव्यवस्था टिकी हुई हैं। किसानों को मिलने वाली सब्सिडी की बहुत चर्चा होती है, लेकिन इस भयानक शेषण के माध्यम से शहर के लोगों को जो सब्सिडी मिलती आई है, उसकी तरफ किसी का ध्यान नहीं जाता। अगर देश की आर्थिक प्रगति सुनिश्चित करनी है, तो हमें शहर और गांव, कृषि और उद्योग के बीच संतुलन बैठाना ही होगा। यह संतुलन स्थापित होने के बाद ही इस प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा कि कृषि क्षेत्र में जो अतिरिक्त आबादी लगी हुई है, वह कहां जाए? जब गांवों में पैसा पहुंचेगा, तब वहां कृषि आधारित लघु उद्योगों का तांता लग जाएगा। अतः किसान व ग्रामीण वर्ग की खुशहाली हेतु स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को लागू करना राष्ट्र हित में होगा।

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।